अनुवादक अशोक जेरथ

मूल्य बारह रुपये (12 00)

प्रथम संस्करण 1980 . ओ० पी० शर्मा 'सारथी'
NANGA RUKKH (Novel) by O P Sharma Sarathi'

नंगा रुक्ख

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित

ओ० पी० शर्मा 'सारथी'

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

अनुवादक की ओर से

किसी भी भाषा की कृति का दूसरी भाषा मे उचित अनुवाद श्रम-साध्य ही नही कठिन भी है और जब कृति की शली प्रतीकात्मक हो तो यह काय और भी कठिन हो जाता है।

ओ० पी० शर्मा 'सारथी' का उपन्यास 'नगा रुक्ख', जिसे पिछले वष का अकादमी पुरस्कार मिला है, डोगरी साहित्य मे तो एक उपलब्ध कृति है ही, मैं समझता हू कि हिन्दी पाठकवग के लिए भी यह कृति नवीनता के सोपानो को उजागर करेगी। वैसे तो डोगरी साहित्य मे अनेक छुटपुट प्रयोग हो रहे हैं किन्तु किसी प्रयोग को आन्दोलन के रूप मे प्रस्तुत करने का श्रेय 'सारथी' को जाता है। प्रतीकात्मक शली के कनवास पर यथाथ के चौखटे खडे कर अपने सटीक विचारो के रग भरना—उनके पाचो उपन्यासो म मुखरित हुआ है। 'नगा रुक्ख' इस आन्दोलन का आरम्भ था तो 'मकान', रेशम दे कीडे', 'पत्थर ते रग' और 'अपना अपना सूरज' इस आन्दोलन की आधारशिला।

'सारथी'—एक चित्रकार, सगीतकार और रचनाकार के सामूहिक रूप को लेकर उन्हे समन्वित कर दी गई एक सज्ञा है। 'सारथी' की कलाकारिता का उदय एक चित्रकार के रूप मे हुआ। 1962 तथा 1964 मे 'सारथी' की एकल प्रदशनिया इस बात की साक्षी हैं। चित्रकार फिर तूलिका के साथ साथ कलम भी चलाने लगा था। निरन्तर पिछले दो दशको से आकाशवाणी से नाटको एव वार्ताओ का प्रसारण और अखिल भारतीय स्तर की हिन्दी, डोगरी, पजाबी और उदू पत्रिकाओ मे प्रकाशन उनकी बहुमुखी प्रतिभा की ओर इगित करता है। 1972 मे

सारथी की डोगरी कृति 'सुक्का बारूद' को स्थानीय कला अकादमी ने पुरस्कृत किया तो पहली बार इनकी पहचान डोगरी के साहित्यिक मंच पर डोगरी रचनाकारों तथा बुद्धिजीवी वर्ग को हुई थी। फिर यह सिलसिला निरन्तरता लेकर अबाध गति से ऐसा चला कि आज उनकी अनेक कृतियां हमारे सामने हैं। पांच उपन्यास, पांच कहानी संग्रह और दो काव्य-संकलन इनकी लेखनी की रफ्तार की ओर संकेत करते हैं।

'सारथी' की अन्यतम रचना 'नगा रुक्ख' का हिन्दी अनुवाद आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

181 मस्तगढ़, जम्मू
30-5-80

—अशोक जेरथ

वह शिव नही था।

वह एक रचनाकार था, पर उसको विष पीना पडा।

काफी अरसा पहले उसने सुना था—कभी सागर मन्थन हुआ था। उसमे दो घडे थ—एक देवताओ का और दूसरा राक्षसो का। पर अब जो नगर-मन्थन हुआ तो उसमे कुछ भी पता नही चला कि कौन राक्षस था और कौन देवता ? सागर म थन के समय विष और अमत दोनो निकले थे। इसी प्रकार नगर-मन्थन से भी कुछ न कुछ निकलना ही था। बहुत कुछ निकला भी। भीतर से निकलकर सडको और गलियो मे बिखर गया।

आखो मे सूरज की किरणो की रोशनी की जगह लोभ और कामना की कसमसाहट ! मुह म मीठी जबान की जगह दो धारी बछिया, आवाज की जगह किरचे, हाथो की जगह बेलचे और जाघो की जगह स्वाथ की बैसाखिया—नगर-मन्थन के ये महत्त्वपूण सकेत थे, जिन्होने हवा के साथ मिलकर चारो ओर गन्ध से भरी राख बिखरा दी थी। जिसम सास घुटता तो था पर आदमी मर नही सकता था।

काफी दिनो के बाद वह घर से निकला तो गली, जो उसकी ड्योढी के साथ जुडकर वैसे ही लेटी हुई थी, चीत्कार कर रही थी, रो रही थी। उसकी पसलिया काफी हद तक बाहर निकल आई थी। छोटे गडढे, बढकर स्थान स्थान पर नक्शा बना रहे थ। गली के आसपास के अग भुरभुरा कर बह रहे थे। हर कोई राहगीर गली के जख्मा से बचकर, फुदक फुदककर लाघ रहा था। गली के आसपास खडे मकान उसकी हालत देखकर उदास हो रह थे।

'खडाक' की आवाज के साथ ही उसे रुकना पडा। पीछे मुडकर देखा तो एक जवान लडकी—जिसने नये ढग की सैडल डाली हुई थी, मुह और बाजुओ पर सफेद लेप किया हुआ था—गिर पडी थी और अपने आप को सभाल रही थी। पर लाख यत्न करने पर भी वह उठ नही पाई। वह आगे बढा पर उसकी अधनगी छातिया देखकर थम गया। पर यह क्या! एक छाती तो लडकी के शरीर से चिपकी थी और दूसरी गली के खड्डे म गिरी पडी थी जिसको वह अपने पास खीचकर फिर कमीज म रखने का यत्न कर रही थी।

'देख क्या रहे हो मुझे उठाओ।" यह आवाज किधर से आई? उसने आसपास देखा।

मैं ही बोल रहा हू।' लडकी ने कहा। 'मैं लडकी नही लडका हू। लडकी का तो केवल भेस बना रखा है।"

उसने आगे बढकर उसे उठाया और पूछा, "यह रूप तुमने क्यो बनाया है?'

'काम पाने के लिए। सुना था लडकी बनो तो शीघ्र ही काम मिल जाता है।" उसने आकाशी रग की सुत्थन को भाडते हुए कहा।

काम मिल गया क्या?' उसने उससे पूछा।

नही—नही मिला। काम देने वाला हसने लगा। बोला, तुम्हारे मे लडकियो के गुण नही। पहले लडकियो वाले गुण अपने म पैदा करो।'

उसे हसी आ गई पर उसने बडी मुश्किल से उसे होठो पर ही रोक लिया। नगर मन्थन के बाद का कानून था कि हसना हो तो कही उजाड, जगल, अकेली जगह या दरिया के किनारे बैठकर हसो। शहर मे हसने की बुराई को रोकने की जरूरत है।

अब। अब आगे तुम क्या करोगे?" उसने पूछा।

प्रयास करूगा कि मैं किसीके कहने पर उकसाने पर अपने गुण

बदल डालू, नही तो मुझे भीख मागनी पडेगी ।" कहते हुए वह लडकी नही—लडका दूर चला गया । वह अभी चलने को हुआ ही था कि दो चार लडका ने उसे घेर लिया। वह घबरा गया । वे सब मुस्करा रहे थे।

'तुम्हारा नाम क्या है ?" एक ने पूछा ।

"भरत ।" उसने नाम बताया ।

"यह भी कोई नाम होता है । खैर, आगे फिर कभी किसी गिरी हुई लडकी को मत उठाना ।"

"क्यो नही ?" उसने पूछा

"इसलिए कि जिसको उठाओ वह गिरने का आदी हो जाता है। और वह हर बार गिरने के बाद कोई सहारा ढूढता है । समझे ?' उसे उनकी बात खूब अच्छी लगी । उसने कहा—

"तुम सब चेतनशील व्यक्ति हो ।"

'हा—ठीक कहा—आप ठीक कहते हैं ।"

"बिल्कुल ठीक बात कही है—नगर मन्थन के बाद जागरण की एक लहर आई है। काफी अरसे तक हमारे ही वातावरण ने हमारे अधिकारो को अपने नीचे दबा रखा था । अब सब जाग उठी हैं।"

'क्या आप जाग उठी है ?" उसके मुह से निकला

"हा ! स्वय जागकर अब लोगो को जगा रही हैं ।"

तो ये लडकिया हैं। पर य कैसी लडकिया हैं ? न आंखो म कोमलता, न मुलायम होठ, न ही उनपर गुलाब का सा रग। न ही अगो म वह तनाव और लचक ! और छातिया ! छातिया हैं ही नही।

गली से निकलकर वह सडक पर चला आया। सडक पर अच्छी चहल-पहल थी । लोग आ जा रहे थे, भाति भाति के कपडे पहने और अनेक रगो से रगे । कोई पहचान नही कर सकता था कि औरत कौन है और मद कौन है । सब जसे रग बिरगे शो केस घूम फिर रहे हो।

वे भाग रहे थे, उठ रहे थे और बैठ रहे थे।

उसने दो चार को गौर से देखा तो उसे लगा जैसे उनकी बाखा के स्थान पर चाकू लगे हैं जो पलटने ही उसके शरीर में किसी अग में चुभ जाएगे।

सब ही टेढ़े मेढ़े चल रहे थे जैसे मांगी हुई टागो पर चल रहे हो और वे टागें उनके शरीर को रास न आई हो।

दुकानें आदि अच्छी तरह सजी हुई थी जस हर दुकान नई विवाहित हो हार सिंगार कर सज्जन ग्राहक की प्रतीक्षा मे थी पर एक परिवतन उसे महसूस हुआ कि दुकानो पर शीश ज्यादा लग गए थे और सडक पर चलते हर आदमी का अपना ही रूप कई तरह का दिखाई दे रहा था।

एक खुली जगह, जहा पाच-सात आदमी अपने कद से दुगुने लम्बे डण्डे लिए खडे थे और दिन-दुपहर आन-जाने वालो के मुह पर टाच जलाकर उनके चेहरे देख रहे थे दूर बहुत से लोग एक खिडकी की तरफ बढने के प्रयास म लग थे। उसने एक डडे वाले से पूछा 'यहा क्या हो रहा है ?—क्या मिलता है ?'

उसक माथे पर सलवटें उभर आइ। उसने अपना डडा जमीन की सतह पर बजाने के प्रयास म पैरों को तोड डाला और आखो म चिगारिया भरकर बोला—'यहा जि दा नाच होगा।" उसे बडी हैरत हुई—

"भाई साहब कभी मुर्दों का नाच भी होता है ?" उसने पूछा। डडे वाले ने दूसरे को सकेत दिया तो दूसरे ने उसे बाजू से पकडकर भीड से निकालकर सडक के बीचोबीच छोड दिया।

'यहा हतप्रभ हुए खडे क्या कर रहे हो ?" उसके स्नेही मित्र पडोसी ने उसे पूछा।

तस्वीर देख रहा हू !" इतनी बडी और डरावनी तस्वीर उसने कभी नहीं देखी थी। नाचन वाली अधनगी औरत न राक्षसो वाला मुखोटा

पहना था और हाथ मे लप लप करता हुआ एक लम्बा खजर पकडा हुआ था और अच्छा भला नौजवान आदमी उसके पाव पड रहा था।

"यह औरत कत्ल करती है।" उसके पडोसी ने कहा।

"किसका ?" उसने हैरानी से पूछा।

"इसी जवान का—रोज करती है।"

"रोज करती है ?" उसने पूछा, "यह मरता नही ?"

उसका पडोसी जरा सा मुस्कराया—"यह रोज इसका सिर काटती है। नाटक मे। ये दोनो नाटक खेलते है।"

'और गुत्यमगुत्या हुए लोग रोज इसका नाटक देखते हैं ?" उसने पूछा।

"हा नाटक देखते हैं।" पडोसी ने उत्तर दिया।

"मुझे तो सारा नगर ही आज नाटक-सा लग रहा है।" उसने कहा।

उसके पडोसी ने उसे टोक दिया—"नगर के बारे मे कोई बात सडक पर चलते हुए नही करते।"

'क्यो नही ?" उसने जोर से पूछा तो उसके पडोसी ने उसके मुह पर हाथ रखकर उसका मुह बद कर दिया—

'सडक चलते नगर के बारे मे बात करो तो सभी मिलकर पागल कहते हैं और हो सकता है अपने किसी नुकसान से डरकर तुम्हें किसी कोठरी मे बद कर दें।"

वह चुप तो कर गया पर उसके अन्दर एक विप सा घुलता रहा—द्वद्व मचा रहा। वह नगर जिसमे वह रहता था क्या क्या गुल खिला रहा था—उसमे कितने ही परिवतन हो रहे थे और उसको कहने-सुनने का हक नही था।

नगर के बाहर एक बडी सडक थी जो चुप सी लेटी हुई उसास भर रही थी। कभी-कभार गूजती हुई कोई गाडी उस की छाती पर मे

गुजर जाती तो वह फुकार कर करवट बदल लेती थी।

यही अकेली चुप-सी सडक थी जिसपर चलते हुए नगर की कोई बात हो सकती थी। दोनो चल रहे थे ऐसे जैसे सडक के उसास गिन रहे हो, और डर रहे हो कि कही गिनती मे गलती न हो जाए।

अचानक उसका पडोसी खडा हो गया।

यह देखो। उसने गरदन मोडकर देखा—सचमुच देखने की बात थी। कोई दो सौ हाथ लम्बी तस्वीर—इतनी सुन्दर कि देखकर बरसो सन्तोष न हो।

यह इतनी लम्बी तस्वीर कसे लगी है? किसने लगाई है?' उसने पूछा।

कुछ अरसे स यहा यह तस्वीर लगती है, बदलती है फिर लगती है। नय नय रग और नये नये तथ्य! नय नये विचार और नये नये कल्पना के पखो पर परवाज।

व उस बडी तस्वीर के बीच म खडे थे। तस्वीर उनकी समझ म नही आ रही थी। तस्वीर बडी सुन्दर थी। पाच सात गाने वाले आखें बद किए मुह खोले गाने म मस्त थे। उनके अस्तित्व के पोर पोर से लग रहा था कि वे गाने मे सब कुछ भूल गए हैं। उनके हाथो मे साज की जगह हाथी दात थे—बडे-बडे हाथी दात जिनको बजाकर वे स्वर लहरिया निकाल रहे थे।

बन्धु! समझ नही आ रहा—ये गीतकार और सगीतकार तो ठीक है—इनका रियाज भी ठीक लगता है पर कही हाथी के दातो को भी साज की तरह बजाया जा सकता है?"

हाथी दात बजता नही पर दिखाई तो देता है।" उसके पडोसी ने उत्तर दिया। तुमने वह कहावत नही सुनी हुई कि 'हाथी के दात खाने के और दिखाने के और।'

तब ये सगीतकार नही हाथी के दात हुए।" उसने कहा तो

उसका पडोसी जरा-सा मुस्कराया—"हा यही बात है। नगर मन्थन के बाद एक विशेप परिपाटी बन गई है कि हाथी के दात को अपने कन्धे पर रखकर मुह ऐसे बनाओ कि गाते हुए दिखाई दो। तुम भी गवयो मे शुमार हो जाओगे।"

'पर असली गानेवालो का क्या बनेगा ?" उसने पूछा।

"नगर से बाहर एक बस्ती बनेगी।" दूसरे सामान के साथ साथ वहा रेत की भी जरूरत होगी। असल गवैये टट्टुओ पर रेत ढोएगे।"

वे दोनो पीछे होते होते सडक के बीच चले आए थे। बातो मे इतने मगन थे कि उन्हे गाडी की चीखती हुई आवाज भी सुनाई नही दी। गाडी उनके करीब आकर खडी हो गई। ड्राइवर लाल पीला हुआ गाडी से उतरा और सीधे उसके गले से पकड लिया।

'ड्राइवर साहब ! इससे ऐसी क्या गलती हो गई है ? उसके पडोसी ने डरते डरते पूछा।

"यह कोई जगली आदमी लगता है, सडक पर आकर यह कहा खडा हो गया है ? इसको इतनी समझ नही ?"

"माफ करें ! इसको ख्याल नही आया। आगे से यह गलती नही होगी।"

'यह गलती नही जुर्म है। इसको पता नही कि सडको के, गाडियो के और ड्राइवरो के नियम बदल गए हैं। पहले यह नियम था कि हर गाडी के डाइवर को समझ लेना चाहिए कि सडक पर चलता हुआ और खडा हुआ हर आदमी अन्धा है। पर अब सडक पर चलते और खडे हर आदमी को समझ लेना चाहिए कि हर गाडी और हर ड्राइवर अन्धा है। अब छोड देता हू—आगे से ख्याल रखें—" कहकर लाल-पीला होता हुआ डाइवर हाथो से अपना रग सडक पर झाडता गाडी मे जा बठा तो गाडी चिल्लाती हुई चली गई।

'इसने क्या कहा है ?" उसने पड़ोसी से पूछा।
कहा है कि ख्याल रखो हर गाड़ी अन्धी है और अन्धे आदमी की तरह ऊपर चढ़ आएगी। चलो अब आगे बढ़ो।"
थोड़ा-बहुत अन्धेरा हो आया था। दोनों का मन कर रहा था कि और भी तस्वीरें देखी जाएं और कुछ से बातें की जाएं। पर इतनी लम्बी लम्बी तस्वीरें देखने के लिए समय चाहिए। दोनों में मशवरा हुआ कि किसी दिन सुबह से ही देखने के लिए आ पहुंचेंगे।
जैसे जैसे दोनों नगर के पास पहुंचते गए रोशनी बढ़ती गई, दिन होता गया। रात कहां थी ! चारों ओर इतनी रोशनी थी कि आंखों को चुभ रही थी।
अब बाजार का दृश्य और भी सुहाना हो गया था। सब लोग चलते फिरते अच्छे लग रहे थे।—क्या नंगे क्या ढके हुए। क्या पांवों वाले क्या बिना पांव के लूले लंगड़े—मोटे पतले सब सुन्दर लग रहे थे।
कुछ देर बात को उसने अपने मन में ही दबाए रखा पर जिस समय वे चौराहे पर पहुंचे, जहां आदमी ने अपने सिर पर बल्ब जला रखा था उससे चुप न रहा गया। उसने धीरे से कहा—"मंथन के बाद से हमारे नगर के दो हिस्से हो गए हैं।"
'क्या मतलब ?' पड़ोसी ने एक औरत की नंगी टांगें देखते हुए पूछा जो ऊपर से मर्द दिखाई दे रही थी।
'हमारे घर तथा पड़ोस में सूरज अस्त होने के बाद कभी रोशनी नहीं दिखाई देती और यहां, कोई भी कोना अन्धेरा नहीं।"
जो रोशनी हमारे यहां होनी चाहिए थी वह भी यहीं जल रही है—' उसके पड़ोसी ने उसके कान में कहा, 'यहां रोशनी नहीं सोना जलता है।"
क्या कहा, सोना भी जलता है ?" उसने पूछा।
सोना ही तो जलता है। बल्कि जहां थोड़ी बहुत रोशनी जलती

हो उसको भी छीनकर अपने साथ मिलाकर जला डालता है।"

सडको ने उनको घुमा फिराकर गली मे धकेल दिया था। उन दोनो न आपस मे हाथ पकड लिए। गली कुछ ज्यादा ही अन्धेरी थी। वे अभी दो-तीन कदम ही चले थे कि उसका पडोसी अपना माथा पकड-कर बैठ गया। उसका हाथ छूट गया।

'क्या हुआ ? क्यो बैठ गए हो ?" उसने पूछा।

'यहा अन्धेरा कुछ ज्यादा ही है—हमारी गलियो म अन्धेरा ही है। तुमने ठीक ही कहा था कि रोशनी नही जलती सोना जलता है पर यहा सोना कहा है रत्ती-भर भी तो नही !"

2

एक ओर सूरज आ धमका और आग-पीछे देखे बिना ही उसने
उमके दरवाजो को भी आ खटखटाया। वह आखें मलता हुआ उठा,
किवाड खोल और उससे पूछा— क्या बात है ? तुम कौन हो ?'
मैं सूरज हू। मेरे आन पर ससार का दिन चढता है। मैं यह
कहने आया हू कि मैं आ गया हू। दिन हो गया है, अब उठो।"
वह अपने घर म खडा था अन जोर से हसा— तुम तुम सूरज
हो ? तुम्हारी शक्ल तो जली हुई चपाती से भी भद्दी लग रही है।'
सूरज ने बुरा नही मनाया। वह हसा— मेरे बारे मे अनेक लोग
बहुत कुछ कहते हैं। मैं कभी बुरा नही मानता। मेरा काम आना है और
घर घर घूम फिरकर लोगो को जगाना है।'
मैं जाग उठा हू। अब तुम जाओ।" उसने कहा।
मैं चला पर । लोग मुझे कह देते हैं कि हम जाग गए हैं,
आप जाओ। पर मरे पीठ मोडते ही फिर सो जाते हैं। बहुत से लोग
मरे माथ झूठ बोलने लगे हैं।' कहकर उदास चेहरे सहित सूरज उठा
और आकाश के दरिया म तरने लगा।
कमरे के आगे बिछे हुए छोटे से सहन म वह उठ आया। चारो
ओर शोर मच गया था। अपने पराय पडोसी और सगी माथी दुहाई दे
रहे थ भाग दौड रहे थे—एक नाटक सा शुरू हो चुका था।
इस नाटक को वह कब से देखता आ रहा था—उस ठीक से
याद नही, पर यह एक ऐसा नाटक था जो अधकचरा था, जिसका कोई
आरम्भ नही और न ही कोई अत था न कोई चरमसीमा पराकाष्ठा कुछ
भी नही था। पर उसने महसूस किया था कि इस नाटक म पात्र बढते

जा रहे थे। सबको मौखिक पाठ मिला है, याद करने के लिए। सब शोर मचाते हुए उसे याद कर रहे है। सूरज के चढने के साथ साथ वे पाठ याद करते हैं पर एक भी अक्षर उनको याद नही हो पाता। कितने ही अरसे से अभ्यास के नाम पर यह नाटक चल रहा है। कभी-कभी वह सोचता था—रात की चरमसीमा होती है, दिन का अत होता है, दरिया का अत होता है, पहाडो की चढाई का अत होता है यहा तक कि आदमी का अत होता है, पर इस नाटक इस अभ्यास का कोई अत नही। पात्र बढते जा रहे हैं, पाठ लम्बे होते जा रहे हैं अभ्यास कठिन होते जा रहे हैं, और अत का कोई सकेत कही किसी को नही दिखाई दिया।

एक कमरे मे धुआ—अपने अखण्ड साम्राज्य के साथ विराजमान था। एक बूढी औरत अधसूखी लकडियो को फूक मार-मारकर जलाने का यत्न कर रही थी। एक बडे परिवतन के बाद भी अनेक घरो म अधसूखी लकडियो का ईंधन ही प्रयोग किया जाता है। जब यह गीला ईंधन न जले तो उसे जलाने वाला स्वय जलने लगता है।

'तयारी है ?" उसके पडोसी ने आते ही पूछा। उसके साथ आज एक लडकी थी।

"कैसी तैयारी ? कहा की तैयारी ? जो तैयारी सुबह शुरू हो और सूरज के अस्त होते होते समाप्त हो जाए उसे तयारी नही कहते—उसे तो फदा कहत हैं।"

उसका पडोसी जरा हसा—"आदमी फदा तो अपने गल मे डाल लेता है पर मरते दम तक इस फदे से छुटकारा नही पा सकता।"

"तुम कहा जा रह हो ?" उसने पूछा।

"इस लडकी को लेकर जा रहा हू।" पडोसी ने कहा।

'कहा जा रह हो इस लडकी को लेकर ? यह कौन है ?'

"इसे भी तस्वीर देखनी है—वही कल वाली तस्वीर।"

पर तुम तो सुबह सवेरे ही गठरी उठाए तस्वीर देखने को चल पड़े हो ' उसने कहा ।

उस तस्वीर को देखने के लिए पूरा दिन चाहिए । दो कोस पर तो वह पड़ी है ।"

उसे हसी आ गई । उसके पड़ोसी का नई तस्वीरें देखने का कितना चाव है—नये परिवतन के बाद की तस्वीरें । पर यह एक बात क्यो नही सोच सका कि वे तस्वीरे हमारी ही है, हमारे पर ही बनी हैं । हम जब उनके सामने खडे होकर उनको देखकर हसते हैं तब तस्वीरें भी हमारे ऊपर हसती है ।

तुम नही जाओगे ? ' पडोसी ने पूछा ।

मैं शाम को वहा पहुच जाऊगा । तुम्हारा पेट तुम्हारे अपने हाथ है पर मेरा दूसरो के हाथ म है । मैं आज का भुगतान करके आऊगा ।"

पडोसी और वह लडकी चल गए । कुछ समय बाद वह भी बाहर निकल पडा ।

एक अकेली जगह पर से वह रोज गुजरता था । वहा बीच म एक बडा पड लगा था, बडी घनघोर छाया वाला । धूप से झुलसे, जलते, सडत यात्री उसके नीचे बठकर अपने पावो को आराम देते थ । साथ ही उसके बड बड पत्तो मे से निकली हुई ग धमय हवा को अपने फफडो म भरते थ । पर आज वह जगह नगी थी । बिल्कुल विधवा की तरह वराग्यपूण लगती थी । देखते ही उसने महसूस किया कि नगर का कोई बूढा बुजुग जिसकी छाया अजनबी और आत्मीय दोनो को मिल सकती थी, काट डाला गया था । उससे रहा नही गया । आगे बढ़कर उसने एक आदमी को जो काट गए नीचे गिरे हुए डालो को कोच रहा था पूछा, यह बुजुग पेड क्यो काटा गया ?'

नगर की प्रगति के विधान म यह भी एक शत थी ।" उस आदमी

ने उत्तर दिया।

"पेड काटना और छाया को हटा देना भी प्रगति के नियमो मे आता है ?" उसने पूछा।

"धीरे से बोलो—ज्यादा खोजबीन करना चाहते हो तो वह आदमी जिसने अपनी आखो पर काले शीशे चढा रखे हैं उससे पूछ लो।"

"वह आदमी कौन है ?" उसने पूछा।

'अब इस जगह का मालिक।"

'यहा अब और कुछ बनेगा ?" उसने पूछा।

"हा कुछ और बनेगा। दिल का शफाखाना बनेगा।"

"दिल का शफाखाना ?" उसने अचरज भरे स्वर मे पूछा—"तुम तो मेरे साथ मजाक कर रहे हो। दिल का शफाखाना कैसा ? दिल तो वह अग है जो धडकता है और आदमी का रक्त साफ करता है।"

'हा उसीका। नगर के विकास एव प्रगति के लिए एक यह भी नियम है। देखा गया है कि लोगो के दिल ठीक नही हैं—उनको ठीक करने का यह केन्द्र होगा।"

"दिल ठीक नही हैं ?" काले शीशे वाले ने एक पहेली उसके सामने रख दी थी।

"हा ! दिल ठीक नही हैं। दिल के रोग बढते जा रहे हैं।" यह एक पैनी आवाज थी।

"मैं समझ गया हू," उसने नम्र आवाज मे कहा—"आगे दिल का रोग जवानी मे लगता था पर अब तो छोटे छोटे छोकरे भी अपना-अपना दिल थामे बैठे हैं।"

काले चश्मे वाला उसकी मूखता पर हसा—"यह शफाखाना उस रोग के निदान के लिए नही बन रहा। दिल आदमी के शरीर का एक आला है जो रक्त को साफ करता है। उस आले मे कई प्रकार की

बीमारियां जन्म न रही हैं—यह जगह उस आने को ठीक करने के लिए बनाई जा रही है।"

पेड़ भी मन को बड़ा आराम पहुंचाता था। क्या उससे ज्यादा आराम इस "दवाखाने से मिल सकेगा ?" उसने पूछा।

वह बड़ा दरख्त दो कौड़ी का भी नहीं रह गया था। इस दवाखाने पर लाखों रुपया लगेंगे। काली आंखों वाले ने कहा।

"साहब ! मेरे ख्याल में दो कौड़ी का दरख्त जो सुख इस नगर में आने जाने वाले राहियों को देता था वही सुख यहां बना हुआ दवाखाना देगा ऐसा विश्वास नहीं होता।"

तुम्हें विश्वास दिलाकर मुझे क्या करना है ! मैं तो यहां दो-मंजिली इमारत चढ़ाने के लिए जिम्मेदार हूं। वह मैं चार दिनों में चढ़ाकर फुरसत पा जाऊंगा।

वह अपनी नौकरी बजाने पहुंच चुका था पर दिमाग में काट गए वृक्ष की शाखाएं और कोंपलें हुई शाखाएं घूम रही थीं। लोहे के किवाड़ों के पास पहुंचा तो उसके हाथों में पसीना चुहचुहा आया था। ज्यादा देर हो चुकी थी। वह डरता डरता अन्दर गया तो वहां का इन्चार्ज उसीकी मशीन के पास खड़ा था। उसको देखकर वह आज पहली बार हंसा। वह भी हंसा पर साथ ही वह कुछ झिझक भी महसूस कर रहा था। जिस मशीन पर वह काम करता था वह उखाड़ी जा रही थी। इससे पहले कि वह कोई बात कर इन्चार्ज ने ही बात चलाई थी—

'भरत ! मशीन उखाड़ी जा रही है इसके स्थान पर दूसरी लगेगी, जिसके चलाने के लिए आदमी की जरूरत नहीं।"

क्या ? आदमी की जरूरत नहीं ? उसका मुंह अचरज से खुला का खुला ही रहा।

"वह मशीन स्वयं ही सब कुछ कर लेती है। इन्चार्ज ने कहा।

"स्वयं कर लेती है ? वह मशीन स्वयं ही अपने पेट में पत्ते फेंक

लेती है ?" उसने पूछा ।

'मशीन पन्द्रह बीस बाजू लिए है—पत्ते भी स्वयं फेंक लेती है, तेल कम-ज्यादा होने पर ह्विसल भी देती है। शीशी के भरे जाने पर दूसरी शीशी उसके स्थान पर रख देती है, शीशियों के ढक्कन मिला देती है उनको एक सन्दूक में तरतीब से रख देती है।" इन्चार्ज एक ही सांस में कह गया—"हमारे कारखाने की प्रगति एवं विकास के कार्यक्रम में यह भी एक मशीन आनी थी। बहुत-सी मशीनें आनी थी सो आ गई हैं।"

"तब साहब उन मशीनों के लिए आदमी की जरूरत नहीं रही ?" उसने पूछा।

'*जिस समय मशीन आदमी से ज्यादा काम करने लग पड़े तो आदमी* की क्या जरूरत है ?" फिर दो कदम चलकर इन्चार्ज ने एक बटन दबाया तो मशीनें ऐसे चलने लगी मानो भूचाल आ गया हो। सचमुच पन्द्रह-बीस बाजू आगे पीछे चलने शुरू हो गए। उसको किसी चौक में लगी एक बड़ी-सी तस्वीर स्मरण हो आई जिसमें एक राक्षसी चेहरे वाला दैत्य अपने बाजुओं से एक ही बार में कई लोगों को दबाकर निचोड़ रहा था। जिसपर बड़े-बड़े मोटे शब्दों में लिखा था—

"बददयानतदारी और बेईमानी का खात्मा हमारे नगर की प्रगति एवं विकास के कार्यक्रम में शामिल है।" उसे समझ नहीं आ रहा था कि नगर की प्रगति सोचने वाले उस दैत्य को खत्म करना चाहते हैं या उन लोगों को जिनको उस राक्षस ने दबाया हुआ है और उन्हें निचोड़ रहा है।

'कुछ अरसे के बाद यहां चक्कर लगा जाना। यदि तुम्हारी जरूरत हुई तो तुम्हें बता दिया जाएगा।" इन्चार्ज ने कहा।

वह बाहर निकल आया और जब बड़े दरवाज़े के पास पहुंचा तो उसे एक लोहे के आदमी ने रोक लिया—

'तुम बाहर नही जा सकते।'

भाई असूल तो यह है कि अन्दर आने वाले को रोका जाए पर तुम तो बाहर जाने वाले को रोक रहे हो।" उसने लोहे के आदमी से कहा।

अन्दर आती हुई वस्तुओ और आदमी को रोकने के लिए कहा नही लिखा। इस कारखाने का नियम है कि बाहर जाते हुए आदमी को रोको और उसकी तलाशी लो।"

ले लो तलाशी। उसने कहा। लोहे का आदमी कुछ आगे बढा फिर झिझक गया—बोला 'मै अच्छा भला आदमी था, इचाज ने मेरे ऊपर अच्छा लोहा चढा दिया है कि न ही मैं झुक सकता हू न ही किसीको पहचान सकता हू। तुम तो पुराने आदमी हो—मने अगर तलाशी ली तो सिवाय नाडियो के और क्या पाऊगा, अत तुम जा सकते हो।'

काफी अरसे के बाद उसे लगने लगा कि सडक उसे चलने नही दे रही। वह आगे चलता है तो सडक उसे पीछे धकेल देती है। वह चल तो रहा है पर उसे लगता है कि वह एक ही स्थान पर अपने पाव मार रहा है।

काफी देर तक वह पाव मारता रहा। सिर उठाकर सामने देखा—एक बडी दीवार पर एक बहुत बडा इश्तिहार लगा था और उसपर बडे-बडे अक्षरो म लिखा था—प्रगति तथा उन्नति आदि के लिए एक आदमी जिम्मेदार नही—यह काम सबका अपना है सब मिलकर प्रयास करो नगर को और चमकाओ—इसका श्रृगार करो। उन अक्षरो के सिरो पर एक सुदर स्त्री की तस्वीर लगी हुई थी। और उसके नक्श इतने सुदर थे कि देखने वाला सब कुछ भूल जाए। उस औरत के सुनहरी पख लगे हुए थ और वह उडने की तैयारी म लगी हुई थी।

चौराहे मे शायद जलसा था। लोग एक दूसरे के साथ मिलकर खडे थे पर कोई भी किसीको पहचान नही रहा था। सबके सब उस मच की ओर देख रहे थे जिसे कोलतार के खाली डमो पर तख्ते रखकर बनाया गया था। अभी जलसा शुरू नही हुआ था। वह भी उन लोगो मे आकर मिल गया और इधर-उधर घूमने लगा। वह इस कोशिश मे था कि कोई पहचान का आदमी मिले तो उससे वह बातचीत कर सके। पर उसे हैरानी हो रही थी कि नगर म उसकी जान पहचान के लोग कहा गए ? वह उन्हें ढूढ नही पा रहा था। और जो लोग घूम फिर रहे थे वे उसके लिए अजनबी और नये थे।

बडी इन्तज़ार के बाद एक आदमी मच पर चढा पर उसके मच पर चढते ही एक हसी की लहर दौड गई। हसी की लहर ठट्ठो मे बदल गई थी। मच पर चढा हुआ आदमी परेशानी मे चारो ओर देखता रहा। जब लोगो की हसी थमी तो उसने बडे दद भरे स्वर मे कहा—

"आप सब विश्वास करो कि वह मैं ही हू जिसने आपसे कुछ कहना है।"

"एक ऐसा आदमी, जिसके कपडे फटे हो, दाढी बढी हो, पाव मे जूते नही, गले मे कोई माला नही, हमको भला क्या कह सकता है " जोर से एक आवाज आई।

"यह ठीक बात है। न इसने तिलक लगाया है, न ही इसने धोती पहनी है—यह हमे कुछ कहने-सुनने का अधिकारी कैसे हो सकता है ?" दूसरा आदमी बोला।

'इस मच पर चढकर वही बोल सकता है जो बडा हो, हर प्रकार

से बड़ा हो।' तीसरे ने और ज़ोर से कहा।

मच पर चढा हुआ आदमी चिल्लाया

मित्रो। कहने का सम्बध न तिलक के साथ होता है न धोती के साथ और न ही बडप्पन के साथ। कहने और बोलने का सम्बध विचारो और आदर्शो के साथ होता है। मैं सारी उम्र "

तुम सारी उम्र भीख मागते रहे हो।" एक आदमी ने हसकर उसकी बात म बात मिलाई। और अब भी तुम्हारा कतव्य यही बनता है कि तुम जाकर भिक्षा मागो।'

मैं भीख नही मागता अपितु भीख वालो से भीख मागना छुडवाना रहा हू। उनको पढाता आया हू। मच वाले आदमी ने कहा।

तुम मच पर से उतर आओ नही तो तुम्हे उठाकर नीचे फेंक दिया जाएगा।" एक ने कहा।

दूसरे ही क्षण वह आदमी मच पर से उतर गया और उसके स्थान पर कोई दूसरा आदमी आ चढा। उसके आने से तालियो की ऐसी बौछार हुई कि दीवारें तक गूज उठी।

उसने त्रिशूल रूपी तिलक लगाया हुआ था। गले मे चमकती हुई जजीर पडी थी। कानो मे सोने के रिंग थे सिल्क का धोती-कुर्ता पहने हुए था और पावो मे जरी का जोडा पहने हुए था। उसने आते ही सबको नमन होकर ऐसे प्रणाम किया जसे कोई जादूगर तमाशा शुरू करने से पहले श्रोताओ को आदाब बजाता है। फिर बडे मीठे स्वर मे बोला—

मैं सबका सेवादार हू। मैं मिट्टी के बराबर इन्सान हू। मैंने अपने आपको लोकसेवा के लिए न्योछावर कर दिया है। मैं समाज का सेवक हू। मुझे रात को नीद नही आती—दिन को चैन नही मिलता। मैं हर समय आपके दुख-सुख के बारे म सोचता रहता हू। मैं कुछ भी कहने नही आया था। काफी अरसे से आप सबके दर्शन नहीं किए थे

इसीलिए ।" फिर थोडा रुककर उसने कहा—

'मैं एक प्राथना भी आप सबके सामने करना चाहता हू । आपको विश्वास नही होगा पर इसे सच मानें कि मेरे घर मे चोरी हो गई है ।"

चोरी का जिक्र आते ही वहा चारो ओर चुप्पी छा गई। सबको जसे साप सूघ गया हो । मानो उसके यहा नही अपितु सबके यहा चोरी हो गई हो ।

'हम सबको इस बात का दुख है और अत हम चन्दा इकट्ठा करके आपका नुकसान पूरा कर देते हैं ।" एक आदमी बोला जिसने अपने गले मे अपने कद से भी बडी एक तस्वीर रस्सी से बाध कर डाली हुई थी ।

"यह नुक्सान पूरा होने वाला नही ।" रुआसी आवाज मे मच पर से तिलकधारी ने कहा । "मैंने अपने आदश सभाल कर रखे थे जो केवल आपके ही काम आने वाले थे । और कोई चोर ताक मे था । उसे अवसर मिला और वह चोरी करके ले गया । चोरी मेरी नही आपकी हुई है मेरे आदर्शों की नही हुई आपके आदर्शों की हुई है । चोरी मैंने नही की आप मे से किसीने की है । चोर मैं नही, आप चोर हो ।"

कुछ क्षण चुप्पी छाई रही फिर कुछ हलचल हुई। मजमे म से एक आदमी न आग बढकर कहा—

'मैं और मेरे पडोसी कसम खाते हैं कि जब तक आपके खोये हुए आदश आपको वापिस नही ला देंगे, पानी नही पीएगे ।"

"आपके सहारे तो यहा सब कुछ टिका है ।" मच वाले ने कहा ।

'अगर मेरे आदश ढूढ नही सको तब भी मुझे भुलाओ नही, नही तो मरने के बाद मेरी आत्मा तडपती रहेगी ।"

एक बार फिर तालिया बजी—इतनी जार से कि तालिया बजाने वालो की हथेलिया लाल सुख हो गइ ।

"देखा कसा छलावा आदमी है !" उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए

उसके पडोसी ने कहा। भला आदश भी कोई चोरी होने वाली वस्तु है।' पर सब सुनते रहे और वह सुनाता रहा। कइयो ने ढून्न की कसमे भी खा ली।

अजीब ही तमाशा बन गया है। यह तो शक्ल और चाल से ही फरेबी लगता था। पर इससे पहले जो मच पर आया था वह कुछ कहना चाहता था पर लोगो ने उसकी बात नही सुनी।" उमन उदासीन होकर कहा।

य लोग उसके आदर्शो और विचारो का सम्मान करने वाले नही हैं। ये तो तिलक माला और कपडो का सम्मान करने वाले हैं। उस आदमी ने गलती की थी जो मच पर चढ आया था।" उसके पडोसी ने कहा।

कुछ क्षणो मे ही लोग भूल गए कि थोडी देर पहले यहा जलसा हुआ था। व हिले और अपन अपने काम पर चल पडे। मच उखाडने वाला न मच को एक मिनट म उखाड दिया। अब वे उस आदमी को ढूढ रहे थे जिसने किराया और मजदूरी देनी थी। वह आदमी उनको दिखाई नही दे रहा था।

वही पर खडे हुए एक मजदूर ने कहा—

हमारे साथ उस तिलकधारी ने वायग किया था कि तालिया बजते ही तुम्हे मजदूरी दे दी जाएगी। हमने सामान ढोया तालिया बजा-बजाकर अपने हाथो म फफोले बना लिए और अब वह खिसक गया है। मजदूर चिल्लाते रहे। तमाशबीन अपने अपने घरो को चल दिए।

तुम तस्वीर देख आए हो?" उसने अपने पडोसी स पूछा।

तस्वीर कहा देख सका रास्त म ही रुकना पड गया।' पडोसी न उत्तर दिया।

वह क्यो? क्या खास बात हुई? उसने पूछा।

"तुम बडा बनना चाहते हो ?" पडोसी ने पूछा ।

"बडा ! मेरा मतलब है नगर मे बडा कहलाना चाहते हो ?"

'तुम पहेलिया मत बुझाओ—इसका उत्तर मैं बाद मे दूगा, पहल बात करो ।"

"एक जगह एक छबील थी जहा मैं प्यास बुझाता था । वहा से शायद उखाड दी गई थी । मैं एक छबील ढूढ रहा था कि एक महात्मा जी मिल गए ।" पडासी ने कहा ।

"फिर ?" उसने उतावले होकर पूछा ।

"फिर क्या ? उस महात्मा ने कहा अब यहा छबील नही है, मैं हू और मैं आदमियो को बडा बनाने वाला हू ।"

"बडा बनाने वाला ?" उसने पूछा—"कैसे बडा बनाओगे ?"

"यह उसके पास जाने पर पता लगेगा । वह तो कह रहा था कि वह पलो, क्षणो मे आदमी को बडा बना देता है ।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूगा । मैं देखना चाहता हू कि एक महात्मा एक आदमी को पलो क्षणो मे कैसे बडा बना देता है ।"

"वह मुझे बहुत पहुचा हुआ व्यक्ति लगता है । अपने मन मे सदेह मत करो, उसे पता चल जाएगा तो वह गुस्सा होगा । वह पहले ही कह रहा था कि शका करने वाले बडे नही बन सकते ।" पडोसी ने उसे कहा तो वह चुप हो गया ।

सूरज कही अन्धेरे मे खिसक गया था । दोनो छबील की जगह जा पहुचे । वहा महात्मा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था । महात्मा के साथ दो नौजवान थे और दो दूसरे व्यक्ति भी खडे थे । उन्हें पता नही लग सका कि नौजवान थे या लडकिया ।

'तुम आ गए हो ?" महात्मा ने उसके पडोसी से पूछा ।

"जी हा ! आपका आदेश कैसे टाल सकता था !"

'पर जो आदमी तेरे साथ है इसके मन म शका है और शका ठीक नही ।

अब पडोसी ने हसकर उसकी तरफ देखा, फिर कहा 'नही जी, भरत क मन म कोई शका नही ।"

उसने भी इ कार मे अपनी गदन हिलाई— 'बिल्कुल नही ।"

आपम से बडा बनने की उत्सुकता पहले किसको है ?" महात्मा ने पूछा ।

पडोसी आगे बढा— जी ! पहले मैं आया था ।"

तो हम इसे बडा बना दें ? ' महात्मा जी ने अपने पास खड चेलो से पूछा । जरूर बना दे—' सबने एक स्वर म उत्तर दिया । महात्मा तयारी म लग गए । उन्होने एक बडा सा थला निकाला और उसम कुछ ढूढने लगे ।

वह महात्मा को देखता रहा । असल म उसका मन प्राण नही मान रहे थे कि महात्मा जो करेगा ठीक होगा । महात्मा उस बिल्कुल अच्छा नही लगा था । वसे ही नगर के बहुत से लोगो का रग काला था पर महात्मा कुछ ज्यादा ही काला था । बडा बेढब सा शरीर और उतावल हाथ । महात्मा को जल्दी जल्दी अपनी आखें चलाते देखकर उसे एक मागने वाले की बात स्मरण हो आई थी—

बडा हो या छोटा अगर आखें जल्दी-जल्दी झपकाए वह जरूर शतान दिमाग का होता है ।'

महात्मा ने दो-तीन बिजली के बल्ब निकाल लिए । फिर उसके पडोसी को कहा— आओ और दीवार से थोडा हटकर खड हो जाओ ।' उसका पडोसी खडा हो गया । महात्मा एकदम बिजली के स्तम्भ पर चढा और तारो को जोडकर नीचे चला आया और बल्ब को जलाया और पडोसी को कहा— देखो ! दीवार की ओर ।" उसने देखा एक परछाइ, अपनी ही छाया, उससे बडी ।

"यह मेरा पहला चमत्कार है। यह तुम हो—इतने बड़े हो।' महात्मा ने कहा।

"आप धन्य हैं महात्मा जी !" महात्मा जी के चेलों ने एक स्वर मे बखान किया।

वह और उसका पड़ोसी दोनों दीवार पर पड़ी पड़ोसी की प्रतिछाया देखते रहे। दोनों अपने मनमे सोच रहे थे कि प्रतिछाया के साथ आदमी बड़ा कैसे हो सकता है।

"महात्मा जी, मैं बड़ा हो गया हूं !" उसके पड़ोसी ने पूछा।

"हां ! तुम बड़े हो गए हो।"

'पर महात्मा जी, यह तो उतना ही है अलबत्ता इसकी प्रतिछाया जरूर इससे बड़ी है।" आगे बढ़कर उसने महात्मा को कहा।

महात्मा जी ने इतनी ज़ोर से ठहाका लगाया कि विद्युत-स्तम्भ पर बैठे पक्षी आदि डरकर उड़ गए।

"मूर्ख आदमियो ! आज के समय मे वही बड़ा होता है जिसकी प्रतिछाया बड़ी हो। जितनी बड़ी प्रतिछाया उतना बड़ा आदमी।"

'यह तो सचमुच कमाल है—चमत्कार है।" पड़ोसी ने कहा।

"जो कुछ भी है—अगर यह मान भी लिया जाए कि यह प्रतिछाया से बड़ा हो गया है तो फिर क्या होगा ?" उसने पूछा।

'सम्मान और डर ये दोनों साथी भाव है। लोग इसका सम्मान भी करेंगे और इससे डरेंगे भी !"

"पर हर जगह यह अपने को बड़ा नहीं कह सकता। इसको बड़ा करने का मंत्र आपके पास ही है।' उसने कहा तो महात्मा जी को गुस्सा आ गया—'यह जहां भी हमें याद करेगा हम वहीं पहुंच जाएंगे।"—कहकर महात्मा ने अपना डेरा डण्डा उठाया और चलने लगे।

उसने कहा—"महात्मा जी आपने मेरे पड़ोसी को छल लिया है।

आप दूसरा को बडा करने का दावा करते हैं पर आप स्वय कितने बड़े है ?'

नगर की प्रगति एव प्रसार के लिए यह भी बात मान ली गई है कि जिसके पास जितना बड़ा वस्त्र है और जितनी बड़ी प्रतिछाया वह बना सकता है वह उतना ही बडा है—'' महात्मा ने कहा ।

अगर आपके बडप्पन को मानने से कोई इन्कार करे ?"

तो हमारे पास मनवाने के लिए अनेक ढग एव तरीके हैं।" कहकर महात्मा हसा और अपने चेलो की ओर देखने लगा।

आप चल पडे महात्मा जी !" पडोसी ने कहा। 'मैं कल ही मच पर चढकर कहूगा कि मैं बहुत बडा हू। कल आप वहा आएगे ?"

महात्मा दुबारा इतनी जोर से हसा कि सबका हृदय डोल गया।— मेरे आने की कोई जरूरत नही। मुझे इस नगर म कई रूपो मे रहना है। कहा भिखारी हू कही दरबान हू, कही म कम्पाउण्डर हू तो कही मैं अखबार बाट रहा होता हू। मुझ तो पहचानने की बात है—जब पहचान लो मैं हाजिर हो जाऊगा।

महात्मा अपने चेलो का समेटकर दूर चला गया तो उसने जोर से कहा— महात्मा जी ! यह झूठा चमत्कार बद करें। दुनिया से धोखा करना छोडें। अपना यह बहुरूप त्यागें। क्यो अच्छे भले लोगो के दिमाग खराब करते हैं ?"

महात्मा ने अपने चेलो को कोई सकेत किया तो सब गाली की तरह आए और उसे पकड लिया। पडोसी घबरा गया। कहने लगा— 'कह दो कि आप बड़े हैं। नहीं तो ये लोग पता नहीं तुम्हारे साथ क्या सलूक करें।'

उधर से चारो चेलो ने उसको इतना कसकर पकडा हुआ था कि उसके बाजुओ एव गर्दन का रक्तचाप ऐसा प्रतीत हुआ जैसे बद हो गया। वह जोर से चिल्लाया—' महात्मा जी, आप धन्य हैं। आप महान हैं।

आपकी प्रतिछाया भी बडी है । आपके चेले भी महान् हैं ।"

कथा कीतन अपनी चरमसीमा पर था । लोग झूम रहे थे । कइया ने आखें बद की हुई थी । कइयो को शायद नीद भी आ गई थी । वहा बठे हुए कइयो को वह पहचान रहा था । कथा सुनाने वाली और कीतन करवाने वाली एक औरत थी । उस औरत को देख-देखकर उसे हैरानी हो रही थी । उसमे इतना अहभाव और अभिमान लग रहा था कि वह किसी क्षण भी टूटकर बिखर जाएगी । भजन करते हुए एक आदमी दूसरे को सुना रहा था—'मेरी दुकान पर ग्राहक आने कम हो गए हैं । मैंने अपनी स्त्री को कहा है कि तुमने पूरा शृगार करके दुकान पर सिफ बैठना है बात नही करनी । वह एक ऐसा नुस्खा निकला कि अब ग्राहको का भुगतान नही हो पा रहा ।'

दूसरे ने सुनाया कि उसका मुकदमा लगा था । काफी अरसे से तारीखो पर तारीखें पड रही थी । चिंता के कारण वह सो भी नही सकता था । आखिर मे पूजा पाठ करवाया और मकान ही किसीको दे दिया, तब जाकर हक मे फैसला हुआ । मकान दस हजार का था पर मुकदमा जीता साठ हजार मे ।

अचानक सब खडे हो गए थे । आरती होने लगी थी । आरती के समय सब बडी श्रद्धा के साथ होठो को हिला रहे थे । कइयो को आरती नही आती थी, वे अपने कोट एव कमीजो आदि के बटन बद कर रहे थे ।

कथा-कीतन का समापन हुआ तो सब चले गए । वह बैठा रहा । एक अधेड-सा आदमी हसता हुआ आया और हसते-हसते ही उसने उसे कहा—'भक्त जी ! कथा तो खतम हो गई है । अब आप भी घर जाओ और भोग लगाओ घर जाकर ।"

"भोग ? मैं एक बात पूछना चाहता हू ।" उसने कहा ।

"इस समय दर हो गई है। कल पूछें।" उस अधेड ने कहा। मैं शायद कल घर स न आ सकू।"

'अच्छा बोलो क्या पूछना है आपने।' अधेड व्यक्ति ने जिच्च होते हुए कहा।

मैं आपस कुछ नही पूछना चाहता—उस औरत से पूछना चाहता हू।

'औरत से ?' अधेड को थोडा गुस्सा आया— उससे तुम—क्या पूछना चाहते हो ?'

मैं उसीको बताऊगा।' उसने कहा।

वह कथा के बाद किसीसे नही बोलती।' अधेड ने कहा 'वह मरी लडकी है। जो कुछ कहना है मुझस कहो।'

आपकी बेटी है ? उसने पूछा। "यह तो बडी शुभ बात है। बडी दिव्य ज्योति है। सिफ एक बात उसस करनी है।'

झमेला न पड इसलिए अधेड ने उस औरत को बुला लिया। वह औरत आकर बठ गई। अधड ने कहा— पूछिए। शीघ्र ही क्या पूछना चाहते है ?'

मुझ यह पूछना है कि कथा कीतन साध साधना योग ध्यान का सम्ब ध शरीर से होता है ?'

हा होता है। होता ही शरीर के साथ है।' अधेड ने कहा तो औरत न हा म समत किया।

मैंने सुना है जिसकी हम आराधना करते हैं जिसे हम ध्यान म रखत है वह हर जगह एक ही तरह विद्यमान है।

यह भी ठीक है। आप अपना प्रश्न रखें।' अधेड न कहा। मरा यह प्रश्न है कि अगर वह हर जगह है एक ही तरह विद्यमान है तो इस तरह चिल्लाने दुहाई देने और अकड-अकड कर बठने और दुकानदारी सजाने आदि का क्या अथ है ?"

"तुम कोई नास्तिक लगते हो। मुझे पहले ही सदेह था कि तुम कोई दुष्ट हो। तुम परमेश्वर का अपमान कर रहे हो। ईश्वर कहता है कि जो मेरा निरादर करेगा उसको नक मिलेगा।" अधेड व्यक्ति के मुह से झाग निकलने लगी थी।

वह जरा मुस्कराया—"भगवान यह भी कहता है कि उसे दुकान पर रखकर उसका व्यापार करो ?"

अधेड आदमी लाल-पीला हो आया—

"अभी तक भगवती को गुस्सा नही आया इसीलिए तुम बचे हुए हो। अच्छा यही है कि चलते बनो नही तो उसका प्रकोप तुम्हें भस्म कर देगा।"

"मैं भस्म होना चाहता हू।"

अधेड व्यक्ति के बार-बार कहने पर भी वह नही हिला। आखिर मे वह भस्म तो नही हुआ, चार आदमियो ने उसे बोरी की तरह उठाकर मण्डप से बाहर फेंक दिया। जाते-जाते वे चारो कहते गए—'रात्रि को ध्यान से सोना। माता तुम्हें रात का आकर डराएगी।"

वह सारी रात जागता रहा कि डराने के लिए माता आएगी। पर न ही माता आई और न ही उसको डराया। ऐसे ही सुबह हो गई।

पडोस मे कुछ शोर मचा। वह बाहर निकला। काफी लोग इकट्ठे हो चुके थे और जार-जोर से अपनी बात कर रहे थे। उसको कुछ भी समझ नही आ रहा था। उसने एक को पूछा, दूसरे को पूछा तीसरे को पूछा पर किसीने भी उसे पहचाना तक नही।

फिर अचानक ही चारो ओर चुप्पी छा गई। एक पुरानी-सी ड्योढी से एक औरत और एक मद जो आपस म विवाहित लगते थे बाहर आए। औरत चिल्लाने लगी, "यह आदमी पगला गया है और नगर के नियमो का तोड रहा है। इसे पागलखाने भेजा जाए।' सबने औरत के स्वर मे स्वर मिलाकर कहा—"हा इसको पागलखाने भेजा

जाए। यह पगला गया है।"

'क्यो भेजा जाए ?" उसने आगे बढ़कर पूछा—"क्यो पागलखाने भेजा जाए ?"

'यह आदमी इस आदमी के साथ मिल गया लगता है।" कुछ लोगो न कहा—' इसे भी पडोस से निकाल दिया जाए।"

"लेकिन क्यो ? हुआ क्या है ?" उसने पूछा।

"अब नियम यह है कि हर आदमी, हर औरत हर लडकी, हर लडका अपने पाव पर खडा हो। अगर नही खडा हो सके तो पाव और टागें उधार माग ले, किश्तो पर ले ले। पर यह आदमी तो मेरी ही टागें, खडे होने के लिए माग रहा है।" औरत ने कहा—'और जो इसका पक्ष ले रहा है, उसके भी हाथ पाव टूटे हुए हैं। ये दोनो पडोस के कलक हैं। इनका फैसला किया जाए।'

वह जानता था उसके पडोसी तमाशबीन थे पर कोरे तमाशबीन नही। वे हमेशा ही भागने के लिए अपने पाव सिर पर रखे होते हैं। सब लोगो ने औरत के साथ अफसोस किया। दो-चार आदमी जाते-जाते कहते गए—'नगर मे कई औरतो ने चलने के लिए अपनी टागें मर्दों को दे दी हैं। तुम भी यह काम कर दो। तुम्हारे मर्द का भला हो जाएगा। यह पागलखाने जाने से बच जाएगा।"

4

रात का अंधेरा और अकेलापन उसे ही चुभ रहा था और वह उस चुभन पर अपने विचारो और कल्पना के फाहे टिका रहा था। दरवाजे को किसीने खटखटाया। वह उगलियो की आवाज को पहचानता था—बैठे-बैठे ही बोला—"भीतर आ जाओ।"

उसका पडोसी अन्दर आकर बैठ गया। कुछ देर तक खामोशी छाई रही, फिर उसने कहा—"अब इस नगर मे रहने का कोई ढग बनता नही दीखता। जान-पहचान वाले भी अजनबी हो गए हैं। विधान नियम भी बदल गए हैं, उनके साथ-साथ उठना-बैठना बोल-चाल और धर्म कर्म भी बदल गए हैं। सोच रहा हू यहा से डेरे कूच किए जाए।"

"यह क्या सोच रहे हो, नगर छोड दोगे। धरती तो नही छूटती। जहा जाओगे साथ जाएगी।" पडोसी ने कहा।

"लोग तो कुछ और तरह के दिखाई देंगे। कम से कम चेहरे तो नये होंगे।"

पडोसी ने न मे अपनी गर्दन हिलाई—"नही ! कोई अन्तर नही होगा। शरीर बदल जाएगे पर स्वभाव आदि वही होंगे। झरोखे बदल जाएगे पर नजरें वही होगी। क्यो नही हम भी वही कुछ करें, जो कुछ सबने किया है !"

"क्या किया है सबने ?" उसने पूछा।

'बहुत से लोगो ने मुखौटे पहन लिए है।" पडोसी ने कहा।

"मुखौटे ! तुम्हारा मतलब है इनमे, नगर मे रहने और बसने के लिए अपना गुण, धर्म, काम-काज और सोच छोड दें ?" उसने पूछा।

नही कुछ भी पकडना नही और कुछ भी छोडना नही। मुखौटे लेकर रख लेते हैं—जरूरत हुई तो लगा लिए नही तो खूटी पर टाग दिए।'

यह मुखौटे मिलते वहा हैं?" उसने पूछा।

'नगर म धन के बाद नगर के नियम मे यह भी बात फली थी कि ऐसे काम का प्रगति की ओर बढना बडा कठिन है—प्रगति एव प्रसार म रुकावट आएगी अत मुखौटो का रिवाज जारी किया जाए। लोगो ने मुखौटे चढाए हैं तो जरूर मिलते भी होगे।

दूसरा दिन अभी चढा भी नही था कि पडोसी उसके लिए सन्देश लेकर आया—

चलो शीघ्रता करो।'

कहा जाना है?' उसने धय से पूछा।

मैंने दुकान का पता लगा लिया है जहा मुखौटे मिलते हैं।'

दुकान ढूढ ली है? उसने हैरानी से पूछा।

'हा। वहा हर तरह के मुखौटे मिल सकते है। मूल्य चुका कर भी बडी किश्तो म भी और सरल छोटी किश्तो म भी।'

किश्तो पर मुखौटे? वह सोचने लगा—नगर म बहुत कुछ किश्तो म मिलने लगा था। नेकी और बदी दोनो किश्तो पर मिल सकती थी। आदमी और उसके कम किश्तो पर मिल रहे है। अब तो मुखौटे भी किश्तो पर मिलने लगे हैं।

उन्होने नगर वाला रास्ता छोड दिया और बाहर स होते हुए चलने लगे। दोनो थोडा तज चल रहे थ। शहर के बाहर एक जगह थी जिसे पहले उन्होने देखा नही था जिसके तीन ओर ऊची सुन्दर और रग बिरगी इमारतें आसमान को छू रही थी। बीच म एक बडा मदान था जिसमे अनेक लोग धक्कमधक्का म लगे हुए अपनी बारी का इन्तजार

कर रहे थे। दूर दूर तक लोगो की पक्तिया साप की तरह ऐंठ रही थी। पर इतने लोग होने के बावजूद वहा शान्ति थी। अक्सर जहा दो चार लोग इकटठे होते हैं वहा किसी न किसी प्रबन्धक की जरूरत होती है पर मजे की बात तो यह थी कि वहा कोई प्रबन्धक न था। वे लोग पक्ति मे खडे अपने होठो मे ही बातें कर रहे थे। वे दोना भी एक पक्ति की पूछ से जुड गए।

"बन्धु ! यहा तो बारी मिलना मुश्किल है।" उसने अनमने स्वर मे कहा।

"बात तो कुछ एसी ही लगती है पर कुछ प्राप्त करने के लिए धय चाहिए।"

कुछ क्षण चुप रहने के बाद उसके पडोसी ने अपने आगे खडे आदमी से पूछा—"भैय्या ! यहा मुखौटो की क्या कीमत है ?'

"कीमत ?" उसने व्यवसायिक ढग से कहा—'बहुत तरह के हैं। कुछ कीमतन भी हैं तो कुछ किश्तो पर भी। जैसा मुखौटा वैसी किश्त। पर लगता है आपने पहले कागज नही भरे।"

'कागज ? कैसे कागज ? पडोसी ने पूछा।

'आप दोनों पहले उस इमारत म जाइए। कागज लेकर उस पूरा करिए।" आग खडे आदमी ने आसमानी रग की इमारत की तरफ इशारा किया। वे दोनो पक्ति मे से निक्लकर इमारत की ओर चले आए। इमारत चार मजिल ऊची थी। नीचे से पता चला कि कागज ऊपर से मिलेंगे। दूसरी मजिल पर पहुचने पर उन्हे तीसरी मजिल जाने का सकेत हुआ। वे दोनो सीढिया चढते हुए इमारत की सजावट देखकर हैरान थे। उन्होने कभी भी ऐसे मकान, ऐसा स्वग नही देखा था। उस इमारत मे सब काम करने वाला ने मुखौटे पहन रखे थे। उनके असल चेहरे छिपे थे। एक और बात जो उसको अखर रही थी वह यह कि कामकाज मे लगे हुए सब जसे निवस्त्र हो

रह थे।

आखिर चौथी मजिल पर चढते हुए उसने पडोसी से कहा—"बन्धु! और तो सब ठीक है पर इन सबका नगे रहना मुझे अच्छा नही लग रहा।"

पडोसी धीरे से हसा। "मुह और आखें दिखाई दें तो पहचाना जा सकता है कि कौन है? और ढका हुआ कौन है? सबने मुह और आखें छुपाई हुई है। एक-दूसरे को पता ही नही कि कौन क्या है!"

चौथी मजिल पहुचे तो एक आदमी ने झुककर उनका स्वागत किया और दरवाजे पर लगे हुए पर्दे को एक ओर हटाकर भीतर जाने का सकेत किया। वे दोनो भीतर चले गए। अन्दर एक बडी सी शीशे की मेज पर बैठा एक आदमी कागज देख रहा था। उनको देखकर उसने हाथ म पकडे हुए कागज एक ओर रखे और उन्हे पूछा—

आपको फार्म भरने के लिए कागज चाहिए।"

'हा हमे भी कागज भरने हैं। हम सीधे ही मुखौटे लेने वाली पक्ति म लग गए थ—किसीने कहा कि पहले कागजात मुकम्मल करने जरूरी हैं।"

हा कागजात मुकम्मल करने जरूरी हैं।" मेज वाले आदमी ने कहा। 'आपको यह भी बताना पडेगा कि आप मुखौटे क्यो पहनना चाहते हैं।"

कुछ समय तक दोनो सोचते रहे कि हमने इस सवाल का उत्तर तो सोचा ही नही कि हम मुखौटे क्यो पहनना चाहते हैं? फिर उसके पडोसी ने झिझकते झिझकते उत्तर दिया— इसलिए कि हम इस नगर के लोगो म मिलकर रहना चाहते हैं—आपको तो पता ही है, कहते हैं—जैसा देश वैसा भेस!"

"एक और भी बात है—हर वह आदमी जो नगर की प्रगति और प्रसार के लिए सोचता है उसको मुखौटा की सबसे ज्यादा जरूरत है। वह लोगो की भलाई और अच्छाई के लिए मुखौटे पहनकर अपनी कमजोरिया और बुराइया छिपा सकता है। अगर लोगो को उसकी कमजोरिया का पता चल जाए तो लोग उसका कहना नही मानते। वसे तो हर आदमी मे कमजोरिया होती हैं पर जिसने किसी दूसरे के लिए काम करना हो उसको अपने आप छुपाने की जरूरत होती है।"

"आपने पते की बात कही है। आदमी फिर आदमी है, अगर उसमें खराबी न हो तो वह देवता हो जाए—परमेश्वर हो जाए—" पडोसी ने कहा।

"अब आप बताइए कि आपको कौन-सी किस्म के मुखौटो की जरूरत है ?"

"यहा कितनी किस्म के मुखौटे मिल सकते हैं ?" उसके पडोसी ने पूछा।

"अनेक किस्म के मुखौटे मिल सकते हैं। सबसे ऊचे मुखौटे, बीच के मुखौटे, घटिया मुखौटे।"—मेज वाले व्यक्ति ने कहा—"यह लें कागज और जिस तरह का मुखौटा चाहते हैं उस जगह पर निशान लगा दें।"

"दोनो ने कागज पकड लिए। उसने मेज वाले से पूछा—

"सबसे कीमती और अच्छे मुखौटो की किश्त क्या है ?"

"सबसे कीमती मुखौटे हमारे पास कम हैं। उनकी किश्त कुछ भी नही। आपको कुछ बदले मे रखना पडेगा।"

"बदले म क्या रखना पडेगा ?" उसने पूछा।

"उसके लिए आपको अपना दिमाग हमारे पास रखना पडेगा।"

' दिमाग," वह झनझना उठा। दिमाग को बदले मे रखना पडेगा।

' हा दिमाग—" मेज वाले ने शब्दो को चबा-चबाकर कहा।

आदमी और पशु म यही बुनियादी फक है कि पशु क पास दिमाग है ही नही पर मनुष्य के पास है। अगर दिमाग ही रख दिया जाए तो मनुष्य पशु हो जाए। उसन सोचा।

दूसरे मुखौटो के लिए क्या-क्या गिरवी रखना पडेगा ?" उसके पडोसी ने पूछा।

दूसर मुखौट इसमे हल्के हैं। उनम से किसीके लिए आँखें, किसीके लिए कान भाव कल्पना स्नेह अहम् और अभिमान आदि गिरवी म रखे जा सकते है। अब आप कागज भरें। सारा ब्योरा यहा लिखा है। आपको सिफ निशान लगाकर अपने हस्ताक्षर करते रहना है।' मेज वाले न एस कहा मानो इमारत के लिए पत्थर भरने हो— 'जल्दी भरो।'

साहब ! आप कुछ सोचने का भी मौका देते है कि नही ?" उसने पूछा। मेज वाला मुस्कराया।

जरूर ! जितना मर्जी सोच। जब इच्छा हो कागज भरकर दे जाए। जाइए अच्छी तरह सोच विचार कर लें।"

दोनो उठ खडे हुए और चलने लगे। अभी वे दरवाजे के पास ही पहुच थे कि मेज वाला बोला— अगर मुखौटा लेने की जरूरत नही हो तो कागज वापिस कर जाए। य कागज गिनती के होते हैं।"

दोनो शीघ्र ही सीढिया उतरकर नीचे आ गए। आगे कई लोग मुखौटे ले लेकर वापस लौट रहे थे। अच्छे मुखौटे भी और घटिया मुखौटे भी तो निकम्म मुखौट भी। दोनो कितनी दूर तक जाते हुए लोगो को देखते रहे। फिर उसके पडोसी न जाते हुए एक आदमी को पूछा— यह मुखौटा बडा सुन्दर है इसके लिए तुमने क्या गिरवी रखा है ?'

वह आदमी गम्भीर आवाज म बोला—' मेरी स्त्री सदा मुझे कहती रहती थी कि मैं अपना दिमाग किसी काम म नही लगाता—आज उसके

कहने पर मैंने उसे थ्धक मे रख दिया है। अब वह प्रसन्न हो जाएगी।" कहकर आदमी चलता बना।

दोनो थोडा आगे बढे। एक आदमी जबरदस्ती उनके बीच आ घुसा। उसने अपने कद से भी बडा मुखौटा चढा रखा था।

'तुम हमारे बीच म घुसकर क्या कहना चाहते हो ?' उसने पूछा।

'मैं आपको अपना मुखौटा दिखाना चाहता हू।'

'क्यो दिखाना चाहते हो ?" उसने पूछा।

"इसलिए कि आप मुझे बहुत छोटा समझते हैं। मुखौटा चढाकर मैं अवश्य ही आपको बडा दिख रहा हू।" कुछ कदम तक वह आदमी बडबडाता रहा, फिर उनसे अलग हो गया।

जिस समय वह चौराहा आया जहा से असल मे डगर शुरू होता था और जहा खडे खण्डहर नगर मे जाने वाले के पथ मे रुकावट पदा करते थे—उसने पडोसी से कहा—'अच्छा हुआ हमने मुखौटे नही लिए। मुझे तो वे इमारतें, उनमे होता हुआ सारा व्यापार बडा खराब लगा।"

स˜या का सूरज अस्त होने से पहले बडा गुस्से से भरा लगता था। और वह अपनी छत पर खडा शू य और उलटे लटके हुए प्याले को देख रहा था जिसके बीच म से सूरज कही गिर गया था। अचानक एक अजनबी आकर उसके सामन खडा हो गया और लगातार उसकी ओर देखन लगा।

"क्या दख रह हो ?" उसन पूछा।

"तुम्हें देख रहा हू।" अजनबी ने कहा।

'क्यो देख रहे हो ? उसने पूछा।

"इसलिए कि क्या तुम मुझे पहचान सकते हो कि नही ?" अजनबी ने कहा।

'तुम !" उसने गौर से देखा। "मैं तुम्ह नही पहचान सका।"

'मैं इस नगर का सबसे बड़ा दार्शनिक, साहित्यकार और समाजसेवी हूं।" अजनबी ने कहा। उसे आश्चर्य हुआ। उसने कहा—

"तुम यह सब होगे। पर यह बात तुम अपने मुंह से कहकर छोटे क्या पड़ रहे हो।"

"इसलिए ही तो मैंने मुखौटा चढ़ाया हुआ है।' अजनबी हंसा। वह कुछ ज्यादा ही परेशान हो आया।

"तुम अपना दिमाग गिरवी रख आए हो ?" उसने गुस्से में पूछा।

"नहीं। खेल के लिए यह मुखौटा मैं किसी पहचान वाले से मांग लाया हूं।' पड़ोसी ने हंसते हुए कहा।

"यह मुखौटा शीघ्र ही उसे लौटा आओ।" उसने कहा।

"कुछ देर और मजाक कर लेने दो।" उसके पड़ोसी ने कहा।

"मजाक ! इन्हीं के कारण तो मैं यह नगर छोड़ देना चाहता हूं।" उसने कहा।

पड़ोसी मुखौटा लौटाने के लिए चला तो उसने उसको बुलाकर कहा—"ऐसा नहीं हो सकता कि यह मुखौटा तुम फाड़ डालो।"

'वह रोएगा।' पड़ोसी ने कहा।

हां। अगर मुखौटे लेकर फाड़ दिए जाएं और इन मुखौटे वालों को इनके दिमाग, कान आंखें कुछ भी वापिस नहीं मिलें तो नगर कुएं में से निकल सकता है।'

पड़ोसी ने मुखौटा फाड़ डाला पर बहुत शोर हुआ। इतना शोर हुआ कि दूसरे लोग छतों पर चढ़कर उन दोनों को देखने लगे।

5

वह अकेला बाग मे बैठा कागज के फूलो को देख रहा था। उस बाग मे पेड-पत्ते और फूल सब कुछ नकली था। वह सोच रहा था कि कौन-से फूल मे कैसी सुगन्ध होनी चाहिए। कौन-सी टहनियो पर पक्षी धोखे मे आकर बैठ सकता है। उसने गर्दन उठाकर आकाश की ओर देखा। पक्षी तेजी से आकर पेडो और पत्तो पर मडरा कर वापिस जा रहे थे। आदमी रगो से और कागज के फूलो से अपने को तो धोखा दे सकता है पर फूल, पत्तो और पेडो के वास्तविक चहेतो को धोखे मे नही रखा जा सकता—वह जरा हसा।

अनदेखे और अनपहचाने एक लडकी उसके पास आकर बैठ गई। वह इतनी सुन्दर, इतनी गोरी और इतनी आकर्षक थी कि एक नजर देखते ही वह काप गया और उठने को हुआ। लडकी ने एक ठहाका लगाया—"बस! यही था तुम्हारा स्नेह, प्यार-भाव और भावना मुझे तुमने भुला दिया है।'

उसने दो-तीन बार आखें मली, अपने सिर को झटका दिया, दिमाग को खटखटाया पर लडकी नही पहचानी गई, आखिर उसने कह दिया—"मैंने तुम्हें पहचाना नही।"

'मैं रमा हू।"—लडकी ने कहा। वह स्तब्ध-सा खडा रहा।

"रमा?"

"हा रमा। वही रमा—तुम्हारा जीवन, तुम्हारा सब कुछ।"

"पर तुम इतनी सुन्दर तो तुम कहा चली गई थी?"

"मैंने शादी कर ली है।" लडकी ने कहा।

"शादी कर ली है? तेरा पति कहा है?" उसने पूछा।

'इसी नगर में। मैंने कई बार उन्हें कहा है कि मेरे साथ चला-फिरा करें पर उनको शर्म आती है।"

'शर्म आती है ? क्यों शर्म आती है ?" उसने पूछा।

'वे कहते हैं मैं तुम्हारा पति नहीं तुम्हारा बाप दिखाई देता हूं।"

'बाप दिखाई देते हैं ! क्या मतलब ?"

'वे बूढ़े हैं।" लड़की ने कहा।

'तुमने बूढ़े के साथ शादी की है—जान बूझकर !' उसने हैरानी से पूछा।

'जान बूझकर किया है। पर फिर क्या हुआ ? इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है ?

'कुछ भी नहीं हुआ। बात भी कुछ नहीं पर फिर भी ...!" उसने अपना चेहरा झुका लिया।

'फिर भी क्या ? सब सुख, सब कुछ मुझे मिला है।" लड़की ने मुस्कराते हुए कहा।

'सब सुख ? सब कुछ ! क्या यह सच है ?" उसने पूछा।

'हां ! सच है। वे लखपति हैं और मैं उनकी पत्नी हूं। उन्होंने दो वर्ष अपना इलाज करवाया—पैसा पास हो तो सब इलाज हो सकते हैं, सब कुछ वापिस आ जाता है।"

यह कौन-सी मिट्टी की बनी हुई है ? क्या-क्या कहती जा रही है ? उसको परेशानी हुई। अब वह क्या कहना चाहती थी वह सोच भी नहीं सकता था।

'तब तुम्हें उसका वफादार होना चाहिए।" उसने कहा।

लड़की ओर से हंसी—'वफादार ! हम दोनों तो जिन्दगी के व्यापार के साझीदार हैं—नफे नुक्सान के भागीदार। वफादारी दोनों ओर से बराबर है पर मैंने उनको और उन्होंने मुझे छूट दी हुई है। वे कहते हैं—घरेलू जीवन विश्वास पर टिका होना चाहिए।"

काफी अरसे तक दोनो के बीच म चुप्पी का राज्य विराजमान रहा। फिर लडकी ने पूछा—"तुम्हारा क्या हाल है ? कसी गुजर रही है ?"

"ठीक है, ठीक ही गुजर रही है । नगर के नये नियमो के कारण अब सभी ठीक हैं—सुखी हैं अत चारो ओर शान्ति है ।' उसने कहा—' नगर ने काफी तरक्की की है । क्या था क्या बन गया है ! जहा श्मशान सी नीरवता थी—वहा इमारतें बल्ब शीशे और फूल लगे हैं । मेरे पति को भी नगरो की प्रगति एव प्रसार के लिए खास दिलचस्पी है । लखपति आदमी की दिलचस्पी के बिना कोई भी नगर प्रगति नहा करता ।"

'पर वे कुछ सोचते भी हैं या केवल कुछ करते हैं ?" उसने पूछा ।

"सोचते भी हैं और करते भी हैं । मेरे साथ तो हर समय लोगो की और नगर की ही बात करते रहते हैं ।" कहकर वह उठ खडी हुई ।

"मैं चलती हू फिर कभी मिलूगी ।" लडकी ने कहा ।

"हा काम होगा तो जरूर मिलना ।' उसने उत्तर दिया ।

'काम के बिना नहीं ?" लडकी ने पूछा ।

वह उसके मुह की ओर गौर से देखने लगा । कुछ भी उत्तर नहीं दिया । उस लडकी के जाने के बाद उसके सारे अगो पर उदासी-सी छा गई । उसका मन प्राण लडकी की ओर ही लगा रहा, अगरचे वह बार-बार अपने को रोकता रहा पर उसका प्रयास विफल ही गया ।

प्रगति एव प्रसार मे पुरानी चीजें और भी पुरानी लगती हैं पर फिर भी आदमी उन्हे छोडता नही शायद इसलिए कि उसे अपनी प्रगति की गति का पता चलता रहे ।

खण्डहर उसके साथ बातें कर रहे थे । एक ने आदमी का रूप धारण कर लिया था—बूढे आदमी का रूप—पुराने आदमी का रूप ! वह बूढा कह रहा था—"मै शुरू से ही खण्डहर नही था, मैं भी एक

घर था। सुन्दर, सुहाना घर। मेरे भी दरवाज़े थे जो खुलने पर बाहर को अन्दर से जोड देते थे और बन्द होने पर अन्दर को बाहर से काट देते थे। बहुत सी खिडकियां भी थीं जिनके माध्यम से अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर झांका जा सकता था। नई और ताज़ा रोशनी के आने के लिए रोशनदान भी थे। दीवारें थीं जो आदमी के नंगेपन को ढकती थीं फर्श थे जिनपर बच्चों के गुदाज पांव, गोरी के गोरवर्ण मुलायम पांव और बूढ़ों के कांपते पांव चलते रहते। पर पर वह सब खत्म हो गया।

पास बैठे हुए खण्डहर ने ज़ोर से ठहाका लगाया—

बस ! यही कुछ था। मैं तो बहुत कुछ था। मुझमें शीशे थे रोशनियां थीं स्वर थे संगीत था और जीवन के गीत थे। पर एक बात है मुझमें वास करने वाले आदमी मुखौटे नहीं पहनते थे। गर्दन कट जाने पर भी अपनी आन नहीं छोडते थे। पर ।" फिर दोनों खण्डहरों ने उसे पूछा— तुम तो नये नगर के नये मकानों में रहते हो। तुम्हारा क्या हालचाल है ?"

वह अनमना-सा हो आया। वह उस विषय पर बातचीत कर सकता था जिसका उसका ज्ञान होता पर नगर और अपने बारे में तो वह काफी दिनों से द्विविधा में फंसा हुआ था।

मैं कुछ भी कह नहीं सकता—" उसने उत्तर दिया।

"आदमी, दीवारें, गलियां, सडकें, चरित्र, कामकाज, नियमें आदि सब एक जगह पर खडे दिखाई दें तो कुछ विश्लेषण कर सकूं।"

'कल दो चार आदमी आए थे उन्होंने मेरी कमर को पांच-सात बार कुदाल से कोंचा और फिर चले गए। मुझे हंसी आई। वास्तव में हम उन्हें पसन्द ही नहीं आए।"—खण्डहर सुना रहा था।

"आवाज़ मुझे भी आई थी। मैं मस्त हो आया था। मुझे वे सारे कागज़ी घोडे लगे थे। जो जगह उखाडने में वे अभ्यासी हैं वे सब नई

हैं। हम पुराने हैं—एक एक इंट पर इनके दांत खट्टे करेंगे ।"

"तुम्हें बहुत ढूंढा," उसका पडोसी उसको घूर कर देख रहा था, "तुम यहा क्या कर रहे हो ?"

"इन खण्डहरों से बातें कर रहा था।" उसने उत्तर दिया।

'खण्डहरों से बातें कर रहे थे ? तुम ठीक तो हो ?" पडोसी ने हंसकर पूछा।

"अभी दोनों खण्डहर मेरे पास बैठे थे। मुझे अपनी कहानी सुना रहे थे।" उसका पडोसी यह सुनकर झनझना उठा। क्या कर रहा है—दोनों उसके पास बैठे थे।

'चलो उठो, चलें—" पडोसी ने उसका हाथ पकडकर उसको उठाने का प्रयास किया।

कहा चलें ?" उसने पूछा। उसका पडोसी घबडा गया था।

घर को।"

"घर ! घर कहा हैं ? किसका घर ?"

सुनकर उसका पडोसी उसके पास ही टाईल पर बैठ गया।

'आज हमारे चौराहे मे एक जलसा होने वाला है—मुझे उसमे लोगो से कुछ कहना है।"

वह सहज हो आया—"तुम्हें कहना है ? क्या कहना है।"

"यही जो कम हो रहा है उसे बढाओ, जो बढ रहा है उसे कम करो।"

"तुम्हारी बात लोग सुनेंगे ?" उसने पूछा।

"हा सुनेंगे। बोलने से पहले महात्मा जी आकर मुझे बडा बना देंगे और बडे आदमी की बातें लोग सुनते है।"

"लोग बात सुन लेंगे तो फिर क्या होगा ?" उसने पूछा।

'सुनकर सोचेंगे।" पडोसी ने कहा, वह जोर से हसा।

"नगर के बहुत से लोगो ने मुखौटे लेने के लिए दिमाग गिरवी

रख दिए हैं और दिमागो के बिना वे क्या सोचेंग ?"

पडोसी उदास हो गया। उसको मच पर चढकर बोलने का चाव था—यह कहकर उसने पडोसी का उत्साह भग कर दिया।

मैं फिर भी कहना चाहता हू।' पडोसी न कहा।

तुम वहा बोलना और मैं तुम्हारा तमाशा देखूगा।" वह खण्डहर की तरफ देखकर बोला।

उड बाजार पहुचत ही उन्हे कुछ नये परिवतन का एहसास हुआ। बहुत स लोग बहुत स सिर बहुत सी आखें बहुत से पर—मतलब यह कि एक सलाब सा गुजर रहा था पर खामोशी स। सब खामोश थ। बहुत आवश्यक बातें कानो म हो रही थी।

चौराहे पर पहुचे तो वहा कुछ भी नही था। न मच था न ही लाग थ। चौराहे पर खडा ही कोई नही हो रहा था।

तुम जो कह रह थ कि तुम्हे लोगो को कुछ कहना है।' उसने पडोसी स पूछा।

उसका पडोसी भी हैरान या लगता था—वह अनुष्ठान ही ठप्प हो गया था। चौराहे क पास खडे एक आदमी को उसने पूछा—यहा मच बनना था? लोगो न लोगो को कुछ कहना था।'

चौरा" वाल आदमी न कोई उत्तर नहा दिया। वह चहलकदमी करता दूर चला गया।

दानो सडक स जब गली म आने लगे तो देखा नुक्कड म एक इश्तिहार लगा हुआ था। अचानक उसकी नजर पड गई। लिखा था—

हम सब और ज्यादा खुशी होना चाहते हैं। खुशी होन का एक और सुगम रास्ता तलाशा गया है कि हम सब देखना सुनना, बोलना और सोचना ब" कर दें। अगर सुनना ही पडे तो कान बद करके गूगें रहना ही पडे तो आखें ब" करके देखें अगर बात बिना कोई

गुज़ारा नही तो मुह बन्द रखकर बोलें।"

पढ़कर उसके पडोसी न उसकी ओर देखा। उसने भी पडोसी की ओर देखा, फिर कहा—

"ज्यादा खामोशी बहुत-से सुखा को जन्म देती है। अब कोई धर्मी कर्मी सबको सुखी देखना चाहता है। शर्तें बडी अच्छी हैं। पर उसीके साथ यह भी लिख दना चाहिए था कि परम सुख की आकाक्षा रखने वाले खाना-पीना, महसूस करना और स्पर्श करना भी त्याग दे।"

"आपन क्या कह दिया है।" उसके कधे पर हाथ रखत हुए एक उद्दण्ड जसे आदमी ने पूछा।

"हम अब स्पर्श और खाना भी छोड देना चाहिए।" उसन कहा।

"आप दोना कोई अजनबी लगते हैं—लिखा है बोलना बद कर द और आप हैं कि बोलत जा रहे है।"

"यहा यह क्यो नही लिखा कि जो बोलता जाएगा उसके साथ क्या बीतेगी ?" उसके पडोसी ने पूछा।

"उसको इनाम दिया जाएगा और एक बडे समारोह मे सम्मानित किया जाएगा।" कहकर उस उद्दण्ड व्यक्ति ने उसका कधा इतनी जोर से भीचा कि रक्त की रेखाए उभर आईं।

"भला कोई यमदूत आदमी था—कन्धा शरीर से उतार गया है।" उसने कहा। उसके पडोसी की समझ म कुछ नही आ रहा था।

अपन कमर म आकर उसने सोचा कि वह भी एक बडा कागज लेकर उसपर लिखे— "मुह, आखें, कान आदि बद करने से आदमी पत्थर रह जाता है, फिर सुख और परम सुख का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता। और उस कागज को बडे इश्तिहार पर लगाकर ढक दे।" पर उसन वह काम दूसरे दिन पर छोड दिया।

सवेरा होत ही वह अपनी छत पर जा चढा। सूरज कुछ ठण्डा और

फला फीका सा लगता था। आकाश पर कुहासा छाया था। पडोस के घरबार भी कुछ नीचे दिखाई दे रहे थे।

'आज तो कमाल हो गया है।" उसके पडोसी ने उसके पास आकर कहा। उस दिन वाली लडकी भी उसके साथ थी।

क्या कमाल देख आए हो ?" उसने पूछा।

'सारा नगर जैसे साफ हो गया है। लोग कही चले गए लगते हैं।"

"लोगो न कहा जाना है ? य तो मडते हुए फल के कीडे है जिन्हें उसीमें घुल-घुल करते हुए मर जाना है।"

'तुम बाहर चलकर देखो तो सही।"

'यह भी साथ जाएगी ?' उसने लडकी के बारे मे पूछा।

हा इसने भी घूमना है।" पडोसी ने कहा।

'इसको साथ क्यो ले आते हो ? उसने पूछा।

'मैं नही लेकर आया यह जबरदस्ती चली आई है। कुछ मूखता की बातें कर रही है कि कुछ पता नहीं किस समय क्या हो जाए ? तुम्हारे साथ पाच सात दिन गुजारने है गुजर जाने दो। मुझे इसपर तरस आया अत मैंने इसे साथ ले लिया।"

उसके पडोसी के कमाल का अथ होता है ऐसा कुछ जो उसने पहले कभी नही देखा। वह सोच म पड गया था कि नगर म जहा होने का या वापिस लौटने का अथ केवल सुनना समझा जाता है—ऐसा क्या हो गया था ?

"क्या सोच रहे हो ?" पडोसी ने पूछा।

'सोच रहा हू आदमी जहा जाए नगा या ढका हुआ शरीर उसके साथ साथ जाता है। भरा हुआ या खाली पेट उसके साथ होता है। मैं समझता हू आदमी देह भी त्याग दे तब भी ये चलते रहते है।"

'मैं समझ गया हू। मैं इतजार कर लेता हू तुम गाडी मे तेल डाल ना।'

तीनो बाहर निकले। बाहर कुछ भी कमाल न था। दुकानो, मकानो, लोगो, सडको, गलियो, नाटकघरो आदि मे वही रग था। वह हर पल सोच रहा था कि पडोसी से पूछे कि उसके कमाल को कहा देखा जाए ? पर वह हर बार झिझक गया। जो लडकी उसके पडोसी के साथ थी वह बार-बार मुस्कराकर पडोसी की ओर देख रही थी। उसका पूछना उन दोनो की प्रसन्नता को झपटने के बराबर था।

नगर मे एक नई बात जरूर थी कि हर गली के हर मोड पर सडक के दोनो ओर, हर रास्ते के बीच मे नई तस्वीर लग गई थी। तस्वीर बहुत बडी थी। जगह-जगह पर लोग खडे होकर उसको देख रहे थे। हर तस्वीर के नीचे लिखा था—

"यह आपकी तस्वीर है।" पर तस्वीर को देखकर हर आदमी एक-दूसरे को देख रहा था, जैसे पूछ रहा हो—क्या यह हमारी तस्वीर है ? हर तस्वीर मे एक आदमी खेतो मे से सोने और बालिया काट रहा था।

"यह तस्वीर हमारी है ?" एक आदमी ने उसके कानो मे पूछा।

'लिखा तो यही है !" उसने उत्तर दिया।

"मेरे पास न खेत हैं, न बैल, न हल-पजाली। मैं तो सडक पर काम करता हू। ऊपर से मजाक यह किया गया है कि मैं सोने की बालिया काट रहा हू।"

हर आदमी शायद एक-दूसरे के कान मे यही बात कह रहा था क्योकि उनम से किसीके पास भी जमीन नही थी, बैल नही थे, हल-पजाली नही थे।

"मेरा दिल कर रहा है कि मैं यह तस्वीर उतारकर फाड डालू।" एक दूसरे आदमी ने उसे कहा।

"तुम्हे यह अधिकार नही है।" उसने कहा।

"क्यो नही है ?"

"इसलिए कि बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो सोने की बालियो क फसल लेते हैं। यह तस्वीर उनकी भी है।"

वह आदमी उसकी तरफ हैरानी से देखने लगा—

नगर म सोने की कटाई ? वे कौन हैं ?"

'तुम सोच भी नही सकते—मुझे लगता है कि तुम आग भी दस-पन्द्रह वर्ष सोच नही सकोगे। हम खेत हैं—हम म सोना उगता है। कटाई करने वाले वे है जिन्होने मुखौटो का व्यापार खोल रखा है और नग घूम रहे हैं। उनको पहचानना कठिन है क्योकि उन्होने अपना मुह और आखें छुपा रखी हैं।'

उसने उस आदमी से बात क्या शुरू की कि बारूद को आग लगा दी। सारे लोग उसके आसपास जमा होने लगे। वह घबरा उठा। अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगा। उसको पता था कि तस्वीर लटकाने वाले भी कही आसपास ही होगे। वहा भीड देखकर वे शीघ्र ही आ पहुचेंग। उसको यह भी भली भाति पता था कि सडको और चौराहो पर तस्वीरें लटकाने वाले कोई मामूली आदमी नही होते। उनके पास सारा सामान होता है। कील काट जजीरें हथौडे, सीढिया आदि सभी कुछ। और सबसे बढकर उनके पास इतनी सामर्थ्य होती है कि व चाहें तो तस्वीरो के स्थान पर आदमी को ही चौराहो पर लटका दे। वह सिर-मुह छुपाता हुआ धीरे धीरे खिसका और भीड से दूर एक बडी इमारत म सीढियो मे जा खडा हुआ।

'वहा क्या बात हो रही थी ?' सीढियो पर खडे हुए आदमी न उससे पूछा।

'पता नही। मैं भी आपसे पूछने वाला था कि वहा क्या तमाशा हो रहा है।" उसने बडे खुश्क लहजे म उत्तर दिया।

उस आदमी ने उसको भीड की तरफ से ही आते देखा था पर उसने बात बताई नही। कुछ क्षणो मे ही वह हलचल शोर ऐसे दब

गया जैसे पानी डालने से दहकता कोयला बुझ जाता है। सब बिखर गए थे। उसका पडोसी और लडकी वही खडे रहे। वे दोना इधर-उधर देखत हुए शायद उसीको ढूढ रहे थे। वह उतावला हो उठा कि वे अपनी जगह से हिलें—सडक के किसी तरफ पहुचें तो वह भी उनसे जा मिले।

आखिर वे हिले तो वह भी सरका और कुछ कदम तेजी से चलकर उनसे जा मिला।

"तुम कहा रह गए थे ?" उसके पडोसी ने झट से पूछा।

"फिर बताऊगा। यही से घर को चले चलो।" उसने कुछ घबराहट म अपने पडोसी से कहा।

'क्यो ? घर क्यो चले ?"

"तुम मत जाओ, मै घर चलता हू।" उसने कहा।

"पर कोई बात तो समझ मे आए।" पडोसी और लडकी दोनो इक्टठे बोले।

उसको गुस्सा चढ गया। वह वापिस मुडा और घर की ओर चल दिया। पडोसी और लडकी को पीछे छोड आया।

अपने कमरे मे आकर ही उसने दम लिया। सचमुच ही उसका दिल बुरी तरह से धडक रहा था और दिमाग सु न सा हुआ था—उसे भारी लग रहा था।

तुम भले आदमी हो ?"

वह भनभना उठा। उस क्षण उसको अपने पडोसी पर इतना गुस्सा आया कि वह उसके टुकडे टुकडे कर दे। पडोसी ने दो-तीन बार बात करनी चाही पर उसने कोई उत्तर नही दिया तो उसका पडोसी खामोश होकर बठ गया और सोचने लगा कि उसको तो पूछने की जरूरत ही नही, उसे स्वय ही सब कुछ बता देना है। पर फिर भी आदमी का दिमाग अति चचल है—कुछ न कुछ नया करने को ढूढता रहता है,

पुराना खोजता रहता है, उलझता रहता है और कांटे की तरह सारे शरीर मे गडकता रहता है।

"तुम अब घर को जाओ, कल मिलना।" उसने कहा तो उसका पडोसी चुपचाप उठकर अपने घर चला गया।

दूसरे दिन शाम को उसका पडोसी उसे मिला और मिलते ही उसने सुनाया कि कल वाली तस्वीरों के ऊपर और भी अक्षर लिखे गए हैं। लिखा यह गया है कि अगर यह तस्वीर आपकी है तो सबको यह तस्वीर बनना पडेगा।

वह थोडा-सा मुस्कराया—"यही कुछ तो होना बाकी है। एक आदमी डाला छीलता है तो बाकी उसको रोकते हैं अगर सब डालों को छीलने लगें तब भी कोई न कोई रोकने वाला निकल ही आता है। वातावरण म रहते हुए और वातावरण को भोगते हुए लोग जहा जरूरत हो वहा पानी नहीं देते और जहा जरूरत न हो वहा अपना खून बहा देते हैं।"

"एक और बात पढकर आया हू।" पडोसी न कहा।

'अभी और भी बहुत पढना है। बताओ तो क्या पढ आए हो ?"

"महीने के आखिरी दिन एक मच स्थापित होगा। वहा सबका हिसाब किताब हुआ करेगा। इनाम दिए जाएगे और साथ ही अनेकों लोगों को इनाम का अधिकारी न जानकर उन्हे लताडा जाएगा, उन्हे अपमानित किया जाएगा।"

"इनाम कौन-कौन सी बातो पर बाटे जाएगे ?" उसने पूछा।

अनेक बातें हैं। मोटी बात यह कि इनाम उसको मिलेगा जो सडक के किसी जख्म की खबर नगर की प्रगति एव प्रसार करने वालों तक पहुचाएगा। और और इनाम उसको दिया जाएगा जो अपनी सेवा छोडकर दूसरे की सेवा करना अपना धर्म बना लेगा।"

"बन्धु ! छोटे बडे भूचाल आते ही रहते है। हम सब समाप्त होने

जाते हैं । पर अब आने वाला भूचाल शायद ज्यादा ही कठिन हो !"

"आज कौन-सा दिन है ?" उसने अपने पडोसी से पूछा ।

"आज आखिरी दिन से पहले वाला दिन है ।" उसके पडोसी ने अपनी उगलियो पर गिनते हुए उसे बताया ।

चारो ओर रौनक थी, चमक थी, शोख रग और ढग थे । पूरे जहा के लोग वहा इकट्ठे हुए थे । बडी भारी भीड थी । बडा भारी मच स्थापित किया गया था । उन सबको देखकर लगता था कि सब इन्द्रपुरी मे रहते हैं । पर सच बात और थी । सचाई तो दूरी पर बैठी हुई थी । सचाई तो मात्र उनकी बातो को सुनने और उनको देखने के लिए ही वहा उपस्थित थी । उनकी मीठी बातें सुनने के लिए, उनके चिकने, मुलायम और दूधिया शरीर देखने को और बार बार तालिया बजा कर अपने हाथ लहुलुहान करने के लिए । सचाई एक ओर दुबकी हुई बैठी थी । किन्तु उसकी प्रतिछाया—दिखाई देने वाली सचाई मच पर थी । मिलने वाला, होने वाला और हो रहा सच मच के नीचे था ।

नीचे बैठी हुई सचाई बेकार ही तालिया बजा रही थी और हैरान भी हो रही थी । एक जोर से आवाज आई—

"तुम सब हमारे सिर के ताज हो । आपके कारण हम हैं और हमारे कारण आप हैं । हमारा-आपका सम्बन्ध, रिश्ता, नाता युग युग से बना है । दरअसल यह पर्व हमारा नही है, बिल्कुल हमारा नहीं है, यह पर्व आपका है । आपके कहने पर रचा गया है और आपके लिए ही ।" जो आदमी और स कह रहा था वह पहचाना नही जा रहा था, उसने ऐसा मुखौटा पहना हुआ था कि असल भी छुप जाए और नकल भी । फिर वास्तविकता और नकल दोनो ही दिखाई दें ।

तालिया इतनी बजी कि धरती आकाश दोनो काप उठे । तालियो की गडगडाहट और निरतरता के कारण अगला कार्यक्रम काफी देर

रुका रहा। और जब अगला कार्यक्रम शुरू हुआ तो आकर्षक नयन नक्श वाली सुंदर देह लिए एक औरत, जो ज्यादातर मर्द लगती थी, मंच पर बने हुए आसन के बीच खडी हुई। वह कुछ देर वहां खडी होकर गौर से चारों ओर देखती रही फिर मंच के एक कोने में पहुंच कर बोली— अब कितनी शांति है कितना आराम है, कितना ठहराव है यह सब कुछ तभी हो सका है जब सबने मिलकर जोर लगाया है। सबने पूरी लगन और जुनून के साथ चारों दिशाओं को संभाला है। आज का यह शुभ पर्व, इस सुन्दर, सुहावने और शान्तिपूर्ण नगर के लिए एक ऐतिहासिक पर्व के तौर पर स्मरण किया जाएगा। कुछ लोगों ने तो नगर के रूप के निखार के लिए अपना सुख, आराम, अपनी नींद तक त्याग दिए हैं।

फिर उसने जोर से एक आदमी का नाम पुकारा। वह नाम तो नगर वालों के लिए पुराना पहचाना हुआ नाम था पर जो चेहरा मंच पर दिखाई दिया वह सबके लिए नया और अजनबी था। नये आदमी ने मंच पर चढकर दोनों हाथ ऐसे जोडे जैसे वह पूजा घर में जोडता होगा। फिर उस औरत ने उसके गले में माला डाली जिसमें सोने के कलश और कनक के दाने लगे थे। उसके सिर पर एक जडाऊ टोपी रखी गई। चारों ओर तालियों की गडगडाहट गूंज उठी।

पडोसी ने उसे पूछा कि वह तालियां क्यों नहीं बजा रहा।

यह आदमी तुमने पहचाना नहीं ?" उसने पूछा।

'नहीं, मैं नहीं पहचान सका।"

'यह आदमी वही है जिसने कहा था कि मेरे आदर्श गुम हो गए हैं।"

मंच के ऊपर से औरत की आवाज आई—

"आप लोगों को पता लग जाना चाहिए कि इन महानुभाव ने आपके लिए दुःख की आंच को झेला है। आदर्श को ढूंढना सागर की गहराई

मे से मोती निकाल लाने के बराबर है। इनके आदश दो बार चोरी हुए। दोनो बार इन्होने डुबकी लगाई। डूबे, थक गए पर लगन नही छोडी। अभी तक यह अपने वायदे पर स्थिर हैं और आपके लिए नये-नये आदश खोज रहे हैं।"

पर इनामो के वितरण का एक सिलसिला चला जिसमे काफी लोगो की बारी आई।

"इन्होने घर घर घूम फिरकर लोगो के बीच उभरने वाले स्नेह का हिसाब लगाया है'—तालियां।

"इन्होने ड्योढी-ड्योढी जाकर दिमागी ज़ख्मो की गिनती इकट्ठी की है"—तालियां।

"इन्होने हर जगह घूम फिरकर ये कागज बनाए है कि नगर मे कितने बिना बाजुओ के भी काम करते हैं और कितने बाजुओ वाले काम नही करते।"

' इनकी सेवा को नगर युगो तक भुला नही पाएगा। इन्होने नगर मे भूख और नगापन भगाने का नक्शा तैयार किया है। वह नक्शा अब तक तो वही काम आ सकता है जहा भूख और नगापन न हो। पर शीघ्र ही वह नक्शा तबदीली के बाद हमारे सबके काम आएगा।"—तालियां।

'अब यह महानुभाव है—इनको इनके दुख के कारण इनाम दिया जा रहा है। ये महानुभाव लाखो करोडो के मालिक हैं—अगर चाह तो ससार को सब कुछ दे सकते है पर इनको दुख यह है कि कितने ही आदमी ऐसे है जिनके पास गुरबत ने अपना स्थायी घर बनाया है—उनमे कई कमियां है अत इस दुख मे इन्होने अपना खाना एक वक्त कर दिया है। ये सुखो के भण्डार होकर भी एक समय भूखे रहते हैं। और अपने मोटापे के बावजूद डायटिंग कर रहे है।"

तमाशा समाप्त हुआ पर फिर भी कुछ लोग बैठे रहे। मच पर से

फिर एक आवाज आई—"सब लोग अब चले जाए, जा नही जाएगे उन्हें जबरदस्ती उठाकर भेजा जाएगा।" लोगों ने इस बात पर भी बहुत-सी तालिया बजाइ और उठकर चले गए।

"हम भी चलें ?" पडोसी ने पूछा।

थोडा ठहर जाओ—अब ही तो कुछ देखने का वक्त है। पर हमको छिपकर देखना होगा।" उसने पडोसी से फुसफुसाती आवाज मे कहा।

दोनो अधेरे मे खडे इधर-उधर देखते रहे। आखिर में उसने कहा—"इस दरख्त पर चढकर छिप जाते हैं।"

"पर इसके पत्ते कागजी है 'कड कड' की आवाज होगी।" पडोसी ने कहा।

"चढकर तो देखें।" उसने दो हाथ चढकर कहा। मच पर भी शोर-शराबा था अत दरख्त का शोर उसमे दब गया। वे शिखर पर जाकर बैठ गए।

मच पर से उतरकर इनाम लेने वाले और देने वाले दोनो पक्ष एक ओर इकट्ठे हो गए। सबने चढाए हुए मुखौटे और पहने हुए कपडे उतारे और बिना औरत मर्द की तमीज किए, एक दूसरे के गले मिले।

"मुझे शर्म आ रही है।" पडोसी ने कहा।

"नगे देखकर ?" उसने पूछा।

"पर ये सब लोग तुम्हारे पहचाने हैं ?" उसने पूछा।

"कही देखे हुए लगते है।" पडोसी ने कहा।

ये सब वही मुखौटे बेचने वाले है और कागज भरवाने वाले हैं।"

आधी रात भी बीत गई। पहला पहर भी आ पहुचा—पर मच वालो की भीड बिखरी नही। वे दोनो वृक्ष पर बैठे दगत देखते थक

गए। आखिर दोनो उतरे पर धरती पर पाव टिकाते ही दो आदमियो ने उनको आ दबोचा। एक ने मोटी अखरती आवाज मे पूछा—

"किसको पूछकर पेड पर चढे थे ?"

"हम पूछना चाहते थे पर उस समय वहा कोई नही था।" पडोसी ने उत्तर दिया तो सुनने वाला हस पडा, "आपने सब कुछ देख लिया है ?"

"बडा मजा आया, आनद से आत्मविभोर हो चुका हू।" उसने कहा।

वह फिर हसा—'तब तुम दोनों भी इस मुहिम मे शामिल हो जाओ।"

"कोई शामिल करे तो जरूर शामिल हो जाएगे।" पडोसी ने कहा। उनम से एक आदमी दौडता हुआ गया और दो मुखौटे उठा लाया और आते ही बोला—'यह लो मुखौटे ! चढा लो। अब आप हम म शामिल हो गए हैं। रास्ते मे यदि कोई और आपको पूछने वाला मिल गया तो उसको बताना कि आप नगर की प्रगति एव प्रसार हेतु मुखौटे वालो का हर काम करते हैं। अब जाओ।"

दोनो न मुखौटे चढा लिए। वे दो आदमी चले गए तो झट से उन्होंने अपने मुखौटे उतार फेंके।

"क्या बात है ? तुमने मुखौटा क्यो उतारा है ?" उसके पडोसी ने पूछा।

"मैंने जब मुखौटा पहना तो लगा कि मैं चलना भूल गया हू।'

'मैंने भी जब मुखौटा पहना तो लगा कि मैं बोलना भूल गया हू।"

"दोनो चले चलते है। रास्ते मे अगर कोई पूछने वाला मिलेगा तो जरा-सा चढा लेंगे।" उसने सलाह दी।

6

सड़क के कदम-कदम पर, बड़ बाजार की हर बड़ी दुकान पर, गली के हर मोड़ पर, हर घर की हर नुक्कड़ में काफी कुछ लिखा जा चुका था। जो अब पुराना हो चुका था। और उस लिखे हुए को पढ़ने तथा समझने की आवश्यकता नहीं एसा ढिंढोरा भी पिटवा दिया गया था। जो कुछ लिखा गया था वह कहीं भी नहीं था और जो कुछ सब जगह विराजमान था वह लिखा हुआ नहीं था। लोग कागजों को देखते और आगे बढ़ जाते कई आधे-अधूरे पढ़कर हँसकर आगे बढ़ जाते।

चप्पे चप्पे पर लिखा हुआ लगने पर एक परिवर्तन आ चुका था। कई लोग अपने को तसल्ली देने के लिए उस लिखाई की पृष्ठभूमि की छान-बीन करने लगे। कुछ लोग लिखाई के झूठे रूप को समझने का प्रयास करने लगे। इस तरह लोग दो हिस्सों में बंट गए। साधारणतया लोग इस लिखाई के बारे में जोर से बातें करने लगे। यह लिखाई लोगों की बहस का विषय बन गई।

हर माह के आखिरी दिन पर्व होता था। उनमें इनाम देने वाला और ईनाम लेने वाला की संख्या बढ़ती ही गई। जिनको इनाम मिले व अब कभी कभी बाजारों, सड़कों और गलियों में नंगे चहलकदमी करने लगे थे। इनामी आदमी बेझिझक नंगा चल फिर सकता है—यह शायद नियम था।

'किसी जाल को कसने के लिए ज्यादा खींचतान करो तो वह टूट जाता है पर खिंचाई अभी पूरी नहीं हुई।' उसने पड़ोसी से कहा।

'पर जो चीज अपनी है—उसको क्षण-क्षण के बाद यह कहना

कि यह अपनी है कितनी ओछी बात है।" पडोसी न कहा।
"अब और क्या अपना हुआ है।" उसने पूछा।
"अब तो लिख लिखकर सडक की छाती भी भर दी है।"
"क्या लिख लिखकर?" उसने पूछा।
"सडक अपनी है, इसको अपनी ही समझो, गलिया अपनी है, इनको अपना समझो। बत्ती वाले स्तम्भ अपने हैं, इन्हे अपना समझो।'
सुनकर वह हसा—"हमारे नगर मे अक्सर लोगो को अपनी और पराई चीज म तमीज करनी नही आती। शायद इसीलिए लिखा जा रहा है। कई बार सुनने मे आया है कि कई आदमियो की आखें कोई चुराकर ल गया है। वे अ धे हो गए। दरअसल खराब होत रहे पर यह महसूस ही नही कर सके कि उनकी आखें चुरा ली गई हैं। ऐसे ही सडका, गलिया, बाजारो और स्तम्भो का पता लगते-लगत लगता है कि यह सब कुछ अपना है।"
"यह सब कुछ इस समय अपना नही?' पडोसी ने मूर्खता से भरा सवाल किया।
"नही! अपना नही है।" उसन उत्तर दिया।
'फिर किसका है?' पडोसी ने पूछा।
मुखौटे वालो का—इनाम लेने वाले नगे आदमियो का।"
"तब लिखा हुआ क्यो है कि इन सब चीजो को अपना समझो?"
'इसलिए कि उन्होंने यह सब कुछ छीना हुआ है। कोई माग न ल—पहले ही दुहाई मचा दो कि यह तुम्हारा है।"
'इस परिवतन का अन्त क्या होगा?" पडोसी ने पूछा।
'यह परिवतन नही है, धोखेबाजी है और धोखेबाजी का अन्त धोखेबाजी ही होता है।"

सुबह से लेकर शाम तक उन दोनो ने नगर का कोना कोना छान मारा। नगर म अपार कागजी काम हुआ था। चारो ओर कागजो की चेपिया लगी हुई थीं। सडको की पैबन्द, गलियो का पैबद, वाजारो को पबद। घरो को कागज के पैबद, पेड, पौधा पर कागजी पबद मतलब यह कि पबद ही पबद लगे हुए थे जिनपर लिखा था—"यह आपका है।"

आदमी इटो से जुड थे— इटें हमारी हैं।' आदमी दीवारो से सट हुए थे— दीवारें हमारी हैं।' आदमी स्तम्भा स पल भिन रह थ— स्तम्भ हमारे हैं। आदमी सडकों और वाजारो पर उगली फेर रहे थे—'सडकें और बाजार हमारे हैं।' फिर भी एक भ्रम था कि वाजार, सडकें स्तम्भ, इटे दीवारें अगर हमारी हैं तो इतना कुछ लिखने और ढिढोरा पीटने की क्या उपादयता थी ?

नगर म हवा चली—लिखने और पैबद चेपिया लगान का क्या अथ है ? इनामी आदमियो न जाकर मुखौटे वालो को सुनाया और साथ ही रोना रोया कि हमने रात लगाकर नगर म कागजी पबद लगाए पर बजाय इसके कि लाग सब कुछ अपना जानकर प्रसन्न हो उलट सवाल कर रह हैं—"अगर यह सब हमारा है ता फिर ढिढोरा पीटने का क्या मतलब है ?"

तीन दिन तक मुखौटा वाला बाजार बन्द रहा। तीन दिन तक बहुत गहरी बातें हुईं। सोच विचार का बाजार गम रहा। फिर बडे-बडे कागज लिखे गए जिनपर लिखा था—"यह सब कुछ आपका है।' यह बात स्वीकृत होनी चाहिए। पर आप भी इन सबके हा यह बात कभी सम्भव नही हो सकती। इसलिए पहल केवल यही लिखा गया था कि—'यह सब कुछ आपका है।'

कागज लग गए। लोगों ने पढे—सबने इटें छोड दी, दीवारें छोड

दी, स्तम्भ और सडकें छोड दी, सब कुछ उनका था पर वे सबके मालिक नहीं थे। नगर में खामोशी का साम्राज्य फैल गया।

यह सब कुछ क्या था कि हर चीज आदमी की थी पर कोई भी आदमी किसी चीज का नहीं था? यह अजीब सम्बन्ध था।

कुछ दिनों की खामोशी के बाद एक स्वर उभरा—यह दीवार मेरी है, मैं दीवार का क्यों नहीं? यह इंट भी मेरी है, मैं इंट का क्यों नहीं? यह सडक मेरी है, मैं सडक का क्यों नहीं? ये पेड और विद्युत स्तम्भ मेरे हैं फिर मैं इनका क्यों नहीं?

इस बात में इनामी आदमी भी शामिल थे। वे भी यही सोच रहे थे कि इनाम उनको मिला है पर क्या वे इनाम के मालिक हैं!

स्वर तो उभरा पर उसको सुनने वाला शायद इस बार कोई नहीं था क्योंकि नगर में मुखौटे वाला कोई नजर नहीं आ रहा था। इनामी आदमियों ने अब कपडे पहन लिए थे। मुखौटों वाली मण्डी में लम्बी छुट्टी कर दी गई थी।

अब घर घर कागज लिखे गए—'सडक हमारी है,' 'हम सडक के हैं' 'दीवारें हमारी हैं और हम दीवारों के हैं, 'विद्युत के स्तम्भ, पेड, इंटें, गलियां हमारी हैं और हम इनके हैं।'

क्योंकि कागज सबने लिखे थे और सबने लगाए थे इसलिए पढे ही किसीने नहीं, भला लिखने वाले, स्वयं लगाने वाले भी कहीं पढते हैं?

उसने भी एक बडा कागज लिखा। बहुत से रंगों में। वह उसे अभी लिख ही रहा था कि उसका पडोसी आ पहुंचा। वह देखता रहा —वह लिखता रहा और पडोसी उसे निरखता रहा। बात बहुत छोटी सी लिखी थी।

"यह तुमने क्या लिखा है?" पडोसी ने पूछा।

'जो भी लिखा है पढ लो।" उसने उत्तर दिया।

"मैंने पढ लिया है। इसका अर्थ पूछ रहा हू।"

'दूरी का अर्थ दूरी ही होता है।' उसने कहा।

"समझ रहा हू। पर किसकी दूरी? किससे दूरी? कैसी और कौन-सी दूरी?" पडोसी ने पूछा।

'दूरी?' उसने अपने आपसे सवाल किया। 'अपने आप से दूरी, तुम्हारे से दूरी, गली से दूरी रोशनी से दूरी, दूरी ही दूरी है। कोई भी चीज पास नहीं।"

पडोसी परेशान हो उठा— ये कागज लिखने बद नहीं होगे—कब तक हम लिखते रहना है और पढ़ते रहना है?'

वह हसा— जब तक आदमी है दीवारें है गलिया हैं, सडके है पड और स्तम्भ हैं कागज लिखे जाएगे— और हम पढ़ेंगे।"

मैं अब लगे हुए कागज पढना छोड दूगा।' उसके पडोसी ने कहा।

'छोड सकते हो? पर मेरे विचार मे नगर मे रहते हुए यह बात सम्भव नही हो सकती।' उसने कहा।

'सम्भव क्यो नही?" पडोसी ने पूछा।

इसलिए कि हर आदमी लिखना चाहता है अगर लिख नही सकता तो लिखने वाले के साथ जुडना चाहता है। हर आदमी इश्तिहार लगाना चाहता है, अगर लगा नही सकता तो लगाने वाले के साथ जुड जाता है। हर आदमी लगा हुआ इश्तिहार पढ़ना चाहता है अगर पढ नही सकता तो किसी पढ़ने वाले के साथ जुड जाता है।'

पडोसी सोच मे पड गया। बात उसके दिमाग की थी। वह तो सदा सदेश लाने का काम करता है। पढ़े-सुने हुए संदेश। उसने कई बार सोचा था कि वह जो कुछ पढ रहा है उसके बारे मे वह नहीं सोचे, जो कुछ सुन रहा है उसकी ओर ध्यान न दे—पर यह कभी

सम्भव नही हो सका था ।

"अगर तुम पढने और सुनने से सचमुच सन्यास ले रहे हो तो मेरा एक काम करना ।" उसने कहा ।

"मैं सन्यास लू या नही पर तुम काम बताओ । तुम्हारा काम करके मुझे शांति मिलेगी ।"

"तुम्हे एक तकलीफ उठानी है—है तो बडी मुश्किल क्योकि नगर के हर घर मे तुम्हे जाना पडेगा ।" उसने कहा ।

"हा मै जाऊगा ।" पडोसी ने बडी चुस्त आवाज मे कहा ।

"हर आदमी, हर औरत, हर लडके से तुम्ह एक सवाल करना होगा ।"

"हा मै करूगा ।" पडोसी ने कहा ।

"सिफ सवाल पूछना ही नही होगा अपितु उत्तर भी लाना होगा ।"

"हा ले आऊगा, तुम सवाल तो बताओ ।" पडोसी ने कहा ।

"एक एक आदमी से पूछना है कि वह अपने करीब है या दूर ? वह घर के करीब है या दूर ? वह पडोसी के पास है या दूर ? वह सडक के करीब है या दूर ? वह गलियो, पेडो, ईंटो के करीव है या दूर ? वह आदमी के करीब है या दूर—बस !"

"बस स ! तुमने ऐसे कहा है जैसे यह काम बडा सरल हो ।" पडोसी ने व्यग्य भरे लहजे मे कहा ।

"यह कठिन काम है ?" उसने पूछा ।

'तुम्हे नही लग रहा कि यह काम कठिन है या सरल ?" पडोसी ने खीझ भरे स्वर मे कहा ।

"तुम तो अभी कह रहे थे कि तुम्हारा काम करके मुझे सान्त्वना मिलेगी ।"

पडोसी चुप हो गया । उसने सोचा कि वह इतनी जल्दी अपने

शब्दों से मुकर रहा है। अतः थोड़ा ठहरकर बोला—"मैंने एक पड़ोसी के नाते तुम्हारे साथ बोलने का अधिकार प्रयोग किया है—बस यह काम मैं अवश्य करूँगा।"

7

पडोसी को काफी अरसे तक जागना पडा । एक विचार उसको परेशान कर रहा था कि वह उसके बताए हुए सवाल कहा से, कौन से आदमी से और कौन से घर से शुरू करे ?

सुबह सवेरे आख खुलते ही उसके दिमाग मे वही चिता घुलने लगी ।

हा ! ठीक है । अपने पडोस, अपने घर के दरवाजे से ही शुरू कर लो । बेकार ही चिता लगा रखी थी ।"

एक किवाड खटखटाया—खुला । खोलने वाला जरा सा हसा—"आज सुबह सवेरे ही ? क्यो, क्या बात है ?" प्रश्न हुआ ।

'मैंने तुमसे कुछ बातें पूछनी है ।" पडोसी ने कहा ।

'एक आधी बात पूछनी है तो खडे-खडे पूछ लो और यदि बहुत-सी बातें हैं तो शाम को दरिया से लौटूगा तो पूछना ।'

वह थोडी देर सोचता रहा—उसे तो बहुत कुछ पूछना था ।

"अच्छा शाम को मिल लूगा ।" उसने कहा और दूसरे दरवाजे पर हो लिया ।

काफी देर तक वह किवाडो को खटखटाता रहा फिर किवाडो की दरार म से भीतर देखने का यत्न किया । अन्दर आगन मे लडाई लगी हुई थी । वह सुनने लगा । मर्द कह रहा था—

"तुम्हे ऊची इमारतो पर चढकर नीचे की ओर देखने का चाव है—यह बात यदि मुझे पहले पता होती तो तेरे साथ सम्बन्ध तो एक बात है, तुम्हारी शक्ल भी नही देखता ।"

औरत कह रही थी—"हमे धोखे मे रखा गया—बताया गया था

चार चौबारे अपने हैं पर यहा आकर देखा दीवार भी अपनी नही है।'

फिर मर्द आगे बढा और औरत का बाजू से पकडा। उसी समय पडोसी ने जोर से किवाड खटखटाए। मर्द ने औरत की बाजू छोड दी और आकर दरवाजा खोला। वह पडोसी को अपने सामने पाकर मुस्कराया और फिर पूछा, 'क्या बात है! कोई खास जरूरत पड गई है क्या?'

'हा! आपकी जरूरत पडी है, आपसे कुछ पूछना है।" पडोसी ने कहा।

'क्या पूछना है? आदमी ने पूछा"

"बैठकर पूछूगा। काफी कुछ पूछना है।"

मर्द उसको अन्दर ले गया, बैठाया, फिर थोडा ठहरकर बोला—"क्या पूछना है?"

पहला प्रश्न है कि आप स्वय के कितने पास हैं करीब हैं?"

'क्या कहा? क्या करीब हैं? मैं समझा नही।" आदमी ने हैरानी से पूछा।

"मेरा मतलब है कि आप अपने आपको कितना समझते हैं, जानते हैं।" पडोसी ने पूछा।

"मैं अपने-आपको? अनोखा प्रश्न है। हर कोई जानता है कि वह आदमी है।"

पडोसी ने बहुत यत्न किया किन्तु उस आदमी को सवाल समझ ही नही आया। आखिर में उस आदमी ने पडोसी से कहा कि उसका दिमाग ठीक नही।

'मेरा दूसरा सवाल है कि आप अपनी स्त्री के कितने करीब हो?" पडोसी ने पूछा।

'स्त्री के?" आदमी हसा—"मैं अपनी स्त्री के काफी करीब हू।

हम दोनों दो शरीर एक प्राण हैं। समझ लें जैसे दूध मे मिश्री। मैं इसको इतना प्यार करता हू जितना मैं अपने-आप से भी नही करता। मेरी तो यह आकाक्षा है कि मैं अपनी स्त्री का स्वरूप ही बन जाऊ, जैसे मीरा ने कृष्ण का स्वरूप धारण कर लिया था।"

उसके होठो पर दूसरा प्रश्न आता आता रुक गया। वह चाहता था कि पूछे कि उसकी स्त्री उसके कितना करीब है ? फिर उसने सोचा कि यह सवाल उसकी स्त्री से करना ठीक रहेगा ! फिर उसने पूछा—

"आप सडक के कितना करीब हैं ?"

"सडक के ! कोई दो सौ कदम हूगा। करीब हू।" आदमी ने उत्तर दिया। पडोसी को हसी आ गई—"मैं कदमो की दूरी नही पूछ रहा। मैं पूछ रहा हू कि सडक के साथ आपका कितना अपनापन है—कितना सम्बन्ध है और कैसा सम्बन्ध है ?"

आदमी ने एक ठहाका लगाया —"ये सिरफिरे प्रश्न कहा से सुन आए हो ? सडक के साथ कभी आदमी का सम्बन्ध, नाता और अपनापन होता है ?"

'होता क्यो नही।" आदमी की औरत बीच मे बोल उठी, 'सडक के साथ आपका कोई रिश्ता नही, जिसपर आप रोज चलते हैं, और चलकर जगह-जगह पहुचते हैं, दुकानो, बाजारो और अपने मित्रो के यहा जाते हैं ?"

पडोसी हैरान होकर उसकी स्त्री को देखने लगा।

'तब फिर यही सम्बन्ध समझ लें कि हम उसपर चलते हैं।" मर्द ने उत्तर दिया।

'आदमी जिसपर चले, चलकर हर जगह पहुचे, जिस चीज की रोज, हर क्षण, जरूरत हो उसके लिए आदमी कुछ करता भी है। आप सडक के लिए क्या करते हैं ?"

आदमी का दिमाग फिर कुंद हो गया। वह अपनी औरत की ओर देखने लगा कि वह कुछ उत्तर देती है। पर वह मुस्कराती हुई चुप ही रही।

"हम सड़क के लिए क्या कर सकते हैं?" मर्द ने पूछा।

"ठीक है कुछ नहीं कर सकते क्योंकि सड़कों का दायित्व आपपर नहीं।' पड़ोसी ने कहा—"अब एक अंतिम प्रश्न है—आप नगर के कितने पास हैं?

"हम तो नगर के बीच में हैं।" मर्द ने उत्तर दिया।

"नगर के साथ आपका क्या सम्बन्ध है?'

"बड़ा भारी सम्बन्ध है। सगे-सम्बन्धी सब नगर में हैं काम काज सब नगर में हैं। मकान, घर आदि सब नगर में हैं।" आदमी ने उत्तर दिया।

"नगर आपके कितना करीब है?' पड़ोसी ने प्रश्न किया।

"फिर पागलों का सा प्रश्न। बता तो दिया है।"

अच्छा ऐसे बताएं कि नगर को आप प्रयोग करते हैं पर नगर के लिए क्या करते हैं?"

आदमी को सोचना पड़ा कि वह नगर के लिए क्या करता है? सचमुच प्रश्न कठिन था। वह काफी अरसे से नगर में रहता आ रहा था पर उसने कभी भी नहीं सोचा था एक रोज कोई यह भी पूछेगा कि तुम नगर के लिए क्या करते हो?

'मैं कुछ भी नहीं कर रहा।" आदमी ने उत्तर दिया।

"अब एक और प्रश्न मेरी ओर से—आपके वातावरण में रहते हुए आदमी आपके कितने करीब हैं और आप उनके कितने करीब हैं? वे आपके लिए क्या कर रहे हैं और आप उनके लिए क्या कर रहे हैं?"

'वातावरण? वातावरण में सारा पड़ोस, सभी मुहल्ले, सारा नगर सब मर्द, सभी औरतें सभी लड़के बूढ़े आते हैं। यह सवाल बड़ा

उलभाने वाला है।" मद ने कहा—"सभी अपने लिए कर रहे हैं। हम उनके लिए क्या करें और वे हमारे लिए क्या करें।"

पडासी मुस्कराया—'आपको वह दिया अब कुछ सवाल मैं आपकी घमपत्नी से पूछना चाहता हू।"

'जरूर पूछो। यह बडी चतुर नारी है। मैं काम पर जा रहा हू पर ध्यान रखना कही तुम्हारे साथ लडने न लग पडे। यह जरा गम तबीयत की है—तदूर, जो बिना उपलो के गम हो जाता है।" कहकर मद वाहर की ओर निकल पडा। उसके जाते ही औरत ने कहा—

'यह बडा निकम्मा आदमी है—बडी शकालु प्रकृति का है। जिस दिन से मैं इसके साथ रह रही हू उसी दिन से कोची जा रही हू। आप पूछें क्या पूछना है। आपका पहला सवाल शायद यह है कि मैं अपने कितनी करीब हू और कितनी दूर। इसका उत्तर यह है कि मैं अपने-आप से बहुत दूर हू। अपने-आप से मरी कभी मुलाकात ही नही हो पाती। आप समझ लें कि मेरे दो भाग हैं—एक भाग ससार से, सासारिक धधो स रिश्ते सम्ब धो से, समस्याओ से, काम से और आकाक्षाओ से तग आ चुका है—वह अब निबटारा चाहता है। दूसरा भाग सिर से लेकर पाव तक वासनाओ, स्वाथ, मनोरथ और बेकार-सी आशाओ से भरा पडा है। मैं किसीके भी करीब नही—न ही मेरा कोई पडोस है, न सडक है, न ही वातावरण और आदमी कुछ भी तो नही। म भी किसीकी नही। जिस जीव के पहले ही दो अलग अलग भाग हो, जो अपने म ही बटा हो वह दूसरो को कैसे अपना सकता है। या दूसरो का भला कैसे कर सकता है।"

पडोसी हैरानी से औरत की ओर देख रहा था। उसके अतर मे एक प्रश्न उसके लिए भी उबल रहा था और वह उसे दबा रहा था।

'म अब चलू?' पडासी ने कहा।

"आपने जो कुछ आज पूछा है वह न ही कोई पूछता है और न ही "

"कोई बताता है।" पड़ोसी ने उसकी बात पूरी की। "पर यह विश्वास रखें कि जो कुछ आपने कहा है वह केवल मेरे तक और केवल मेरे तक ही सीमित रहेगा।" कहकर वह बाहर आने लगा तो औरत ने ड्योढ़ी से आवाज़ दी—

"यही प्रश्न कोई आपसे भी पूछ सकता है। अपने-आपको भी उत्तर के लिए तयार रखें—" औरत मुस्कराई और अन्दर चली गई।

पड़ोसी के दिमाग में ज़रा-सी कुलबुलाहट उठी और बैठ गई। पड़ोसी अभी सोच ही रहा था कि किस ओर जाए उसके दूसरे पड़ोसी ने बुलाया—

आज किधर ?"

"मैं आपके यहां जा रहा था।" पड़ोसी के उत्तर से वह ज़रा चौंका फिर सहज आवाज़ में बोला—'ज़रूर-ज़रूर ! मैं घर को ही जा रहा हूं। आपका अपना घर है ज़रूर आवें।"

वह आगे निकल पड़ा और पड़ोसी पीछे-पीछे। अन्दर पहुंचकर पड़ोसी भौचक्का रह गया। बाहर से डरावने मुख वाला और माथे वाला टेढ़ा कमरा अन्दर से इतना नुमायशी और सजावट वाला हो सकता है उसे गुमान भी न था, वह कभी आदमी की ओर देख रहा था जो मामूली वस्त्र पहनता था और हर मिलने वाले से इतनी नम्रता से हाथ जोड़कर मिलता जैसे खरीदा हुआ गुलाम हो।

एक नुक्कड़ में एक मखमली कुत्ता बंधा था। उसने अपने जीवन में अनेक कुत्ते देखे थे पर ऐसा कुत्ता उसकी नज़र में से नहीं निकला था जिसका चेहरा अपने मालिक के चेहरे से ज़्यादा सुन्दर था। क्षणों में ही उसने पहचान लिया कि उस कुत्ते की शक्ल कई आदमियों से मिलती है। पर खास किसके साथ मिलती है वह सोच रहा था।

"बैठें।" उस आदमी ने बैठने के लिए इशारा किया और जब पड़ोसी बैठने लगा तो उसे हिलोरा-सा लगा। उसका दिमाग चकरा कर

खाने लगा।

'कहिए कैसे कष्ट किया ?" आदमी ने पूछा।

कुछ सवालो का उत्तर आपसे चाहिए।" पड़ोसी ने धीरे से कहा।

'जरूर पूछें। हमारा कर्तव्य बनता है कि अगर कोई सवाल पूछे तो हम उसका सुन्दर सा उत्तर दें।"

'नही।— सुंदर उत्तर नही चाहिए। सही और यथार्थ के धरातल को छूता उत्तर चाहिए।"

'हा, वैसे उत्तर भी दे सकता हू। आप जैसे सवाल पूछेंगे वैसे ही उत्तर पाएगे।" आदमी ने बडे नाटकीय ढग से कहा। उसे हसी आ गई। उसने सवाल शुरू किए—

"आप अपने कितने करीब हैं, आप घर के कितने करीब है, सडक के, नगर के और आदमी के कितने करीब है ?"

"बस ! इतनी सी बात है। मैं डर रहा था कि पता नही आप कैसे अजनबी सवाल पूछेंगे। दरअसल मेरा अपनापन है ही नही—मैं तो सब कुछ बाट चुका हू। लोगो को, नगर के एक-एक आदमी को। उन सबका होना ही वास्तव मे मेरा होना है। उनके अस्तित्व के साथ ही मेरा अस्तित्व जुडा है। मेरा अपना कुछ भी नही। मेरा विचार है आप मेरी बातो से प्रभावित हुए होगे अत मेरा समर्थन करेंगे।" आदमी ने गभीरता से कहा।

वह कुछ उत्तर नही दे सका। उसके कमरे मे रखी हुए चीजें उसने कभी स्वप्न म भी नहीं देखी थी, मूल्यवान शीशे, मूल्यवान बल्ब, चमचम कर चमकते दरवाजे, खिडकिया और झूलते हुए रेशमी पर्दे।

"आपके घर म जो कुछ भी है उसका प्रयोग कौन करता है ?" पडोसी न पूछा।

"मैं इन चीजो को छूता तक नही— कही गलती से हाथ लग भी

जाए तो मिट्टी से तीन बार हाथ धोता हू । यह सब बच्चे, लडकिया और औरतें आदि ही प्रयोग करती हैं । अब आप देखें मैं भी उसी वातावरण म रहने वाला जीव हू । अपने लिए कुछ नही करता, पर इनके लिए करना ही पडता है ।"

'हा करना पडता है ।" पडोसी ने जल्दी-जल्दी अपनी गदन हिलाकर उसका समथन किया, साथ ही वह सोच रहा था कि इस आदमी ने बडा कीमती मुखौटा चढा रखा है । नकल पर मुझे असल का भ्रम हो रहा है । उसने बडी नम्र आवाज मे कहा—

'मुखौटा उतार फेंक । मुखौटे लगाने की जरूरत आपको वहा पडनी चाहिए जहा मुखौटे वाले के साथ बातचीत करनी पडे ।"

वह आदमी जरा मुस्कराया और साथ ही उसके माथे की नसें उभरने लगी ।

"आप मेरे घर बठे हैं । मैं ऐरे-गैरे को घर आने ही नही देता । आपको पहचानने म भूल हो गई, आप यहा स शीघ्र ही चले जाए नही तो मैं आपके साथ पता नही क्या व्यवहार करू ।"

पडोसी कुछ देर तो भय से बठा रहा फिर सुख मुह वाला कुत्ता गुर्राने लग पडा ।

'मैं चलता हू । आज मुझे एक नई बात का पता चला है । आदमियो के लिए तो मुखौटे मिलते थे और वे लगाते भी थे । अब तो मकान भी मुखौटे पहन लेते हैं पहचाने नही जाते ।"

ड्योढी लाघते ही उसको टूटे हुए किवाड ने एसा धक्का लगाया कि वह मुह के बल गली म जा गिरा । कोहनिया छिल गई । पास से गुजरता एक आदमी हसा—

'शरीफ आदमी कजरो के घर से ऐसे ही निकाला जाता है ।'

पडोसी कमरे मे पहुचा तो दीवार पर कागज थे, छत के साथ कागज लटक रहे थे, फश पर कागज फडफडा रहे थे और कमरे के

चारो ओर कागज़ो के ऊचे-ऊचे ढेर लगे थे। कमरे के बीचो बीच कागजो के ढेर से ढका एक लेखक चक्की की धूरी की तरह विराजमान था। उसके सामने एक कागज रखा हुआ था।

पडोसी के अनेक बार बुलाने पर केवल एक बार उसने हा हू की और फिर कागज को ध्यान लगाकर देखने लगा।

"मैंने आपसे कुछ सवाल करने हैं।"

"मुझे फुरसत नही है। कुछ बना लेने दो फिर तुम्हारे साथ बात करूगा।" लेखक ने उनीदी सी आवाज़ मे कहा।

"आप क्या बनाना चाहते हैं?" पडोसी ने हैरानगी से पूछा।

"मैं आखें बनाना चाहता हू।"

"आखें! इन सारे कागजो पर?"

"हा आखें बनाऊगा। मैं बडी दुविधा मे फसा हू। आखें बनाए बिना मैं जाल मे से निकल नही सकता।" लेखक ने उसी उदासीनता से कहा।

"बहुत बडी दुविधा है। मैं यही पर जन्मा, बडा हुआ, इन इटो पर, इन दीवारो मे, सडको, गलियो मे चला, नगर मे लोगो से रहन-सहन का आदान प्रदान हुआ, पर हर जगह मैंने महसूस किया कि मैं अन्धा हू। इन सबका मेरे साथ क्या सम्बन्ध है और मेरा इन सबके साथ क्या सम्बन्ध है मैं कुछ देख नही सका। समझ मे ही नही आ पाया। पर इतना महसूस करता आया हू कि मेरा कोई बडा भारी रिश्ता आदमियो के साथ है, नगर के साथ है, गलियो के साथ है, पत्थरो, ईंटो, पेडो और डालियो के साथ है। इनका भी मेरे साथ पुरातन आजीवन अटूट सम्बन्ध है। पर आपसी रिश्ता क्या है, क्यो है और कैसे है मैं यह प्रश्न सुलझाना चाहता हू। मैं आखें बनाना चाहता हू फिर उनके साथ सब कुछ भली भाति देखना चाहता हू।" लेखक ने कहा।

'जो कुछ आपने अभी तक देखा-सुना है उसीकी बाबत कुछ बताए।" पड़ोसी ने कहा तो लेखक अनमना-सा हो आया।

'आखों, कानों, हाथों, पैरों, चेहरों, टागों और पावों, आपसी रिश्तों और मुखौटों की कहानी मुझे बड़ी ददनाक लगी है। हर जगह लगा कि जहा जो कुछ भी मैं देख रहा हू सचाई और वास्तविकता उससे उलट है। यह सब कुछ उलटा चल रहा है। जो कुछ सीधा है उसे देखने और पहचानने की आवश्यकता है।"

'आप सड़कों के लिए, लोगों के लिए गलियों के लिए और नगर के लिए क्या कर रहे हैं ?" पड़ोसी न पूछा।

मुझ म कुछ भी सामथ्य नही। सामथ्य लोगो म है, व्यक्तियो मे जिनके कारण मैं हू। वैसे मेरी इच्छा है कि लोग सोचने लगें कि मुखौटा क्या है ? आदमी क्या है ? नगर क्या है ? सड़क क्या है ? और वातावरण क्या है ?"

8

गली के साथ स्वर मिलाकर बहुत से लोग शोर मचा रहे थे और वह शोर उनके कानो के पर्दों को फाड रहा था। उसने उठकर दरवाज़ा बद कर लिया। साकल चढा दी तो दीवारें शोर मचाने लगी फश बडबडाने लगा। उसने अपने दोनो कानो मे उगलिया फसा ली तो गली का, लोगो का, दीवारो का और फश का—हर किसीका शोर अन्दर से सुनाई देने लगा। आखिर मे उसने किवाड खोले और बाहर निकल पडा।

बाहर सूरज दिन को ऊपर घसीट रहा था और रोशनी इतनी थी कि आखो मे चुभ रही थी। पर लोग—एक छोटी-सी भीड—आखें फाड-फाडकर शोर मचा रही थी। वह आगे बढकर उनम जा मिला। झगडो का जैसे मेला लगा हो। आदमी ऐसे घूम रहे थे जैसे गन्दा पानी आ जाने से चीटियों की जगह पर भगदड मचती है। एक ही जगह पर सब अपनी एडियो पर घूम रहे थे। एक आदमी दूसरे से कह रहा था—"मेरी बाई ओर ऊचा मकान बना तो मुझे फर्क नही पडा। पर तुमन तीन छत चढाकर मेरी रोशनी और हवा रोक दी है—मैं तुम्हारा कत्ल कर दूगा।"

'तुम उसीके पेट से बाहर आए हो जिसने मुझे भी जन्म दिया है। तुम मेरा कत्ल नही कर सकते।"

दूसरी जगह और शोर था। एक ज्यादा जवान और जोर वाली औरत ने चार बाजू लगाए थे—वह मद को कह रही थी—"तुम मुझे मद बनने से रोक नही सकते। तुम्हारा विचार गलत था कि औरत

केवल वश-वृद्धि के लिए होती है। वह वद्धि भी करती है और आफतें भी लाती है— मैं अब मद बनकर आफ्तें इक्ट्ठी करूगी।"

"पर मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा है? तुम मेरे लिए विनाश का कारण क्यो बन रही हो?' मद पूछ रहा था।

'तुम्हारे हाथ कही होते है, आखें कही होती हैं टागे, बाजू कही होते है, दिमाग कही होता है, तुम तो टुकडे टुकड आदमी हो। मैंने इन टुकडो से कितना अरसा निभाया है इस आशा के साथ कि तुम किसी दिन मुझे साबुत भी दिखाई दोगे—पर यह मेरी भूल थी।"

'मै साबुत हू!" मद चिल्लाया।

'बिल्कुल झूठ! अगर तुम साबुत हो तो मेरे पास क्यो नही। सम्पूर्ण रूप से मेरे क्यो नही?'

'मैं सम्पूर्ण रूप मे तुम्हारा हू। आदमी ने कहा।

'नही तुम सम्पूर्ण हो ही नही सकते। तुम्हारे भीतर कूडा भरा है बहुत सी आखो का, बहुत से होठो का बहुत स गरीबो का बहुत-सी आवाजो का।"

आदमी चिल्ला रहा था—"नही नही नही!"

'आप फैसला कर," एक आदमी ने उसको बाजू से पकडकर अपनी ओर घसीटा—"यह आदमी मेरे साथ लड रहा है। बात बहुत देर की है कि इस आदमी ने मेरे घर की इट निकालकर अपने घर मे लगा ली थी तो मैंने भी इसके यहा की इट निकालकर अपने यहा लगा ली। होते-होते हमने एक दूसरे के घर की इटे अपने अपने घर लगा ली। घर का घर ही समझो बदल गया। आज इतने अरसे के बाद यह आदमी मुझे चोर कह रहा है और कह रहा है कि अगर मैं इसके मकान की इटें न चुराता तो इसका मकान मेरे वाले मकान से दुगुना-तीन गुणा होना था—यही झगडा है।"

इसने धोखा दिया है। यह अपराधी है।" एक आदमी ने बठ

हुए आदमी की ठोडी ऊपर करके उसका मुह सबको दिखाया। इसके पास मूर्ति थी—हम उसकी पूजा करते रहे, फूल, फल, पैसे अनाज और मेवे चढाते रहे। फिर इसने उसके आगे पर्दा कर दिया। हम सब कुछ करत रहे पर इस निम्नजात ने लालच म आकर मूर्ति वेच दी और काफी अरसे तक पर्दे की ही पूजा करवाता रहा। अब वह पर्दा जला तो पता चला कि इसने क्या करतूत की थी।" कहकर उस आदमी न दूसरे को कहा—'यह यहा रहने का अधिकारी नही, इसे पडोस से निकाल दें, लोगा म से निकाल दें, और नगर से निष्कासित कर दें।"

'हा हा, निकाल दो और इसका सामान दरिया मे वहा दो।" दो चार आदमियो न इकट्ठे कहा।

'पर मैं वह मूर्ति वापस ले आया हू।" उस आदमी ने विनती के भाव से नम्र स्वर म कहा। एक ने शब्दो को चवा चबाकर कहा—"हम बिक्री की मूर्ति की पूजा करने वाले नही—हम स्वय बिक सकते हैं किन्तु यह अनथ नही होन दे सकते।"

एक आदमी गला फाड-फाडकर चिल्ला रहा था—

"इस आदमी से एक एक पस का हिसाब लो। यह पैसा सबका साझा था। हमने सोचा था कि इस पैसे के साथ चार मुहो वाला एक मकान बनाएगें—जहाज़ की तरह बडा मकान। उसके एक ओर अनाज के गोदाम होगे तो दूसरी ओर परमेश्वर और भगवान की मूर्तिया भर देंगे। तीसरी ओर रुपये-पैसे की एक बडी मशीन लगाएगे और चौथी ओर सोने, चादी, पीतल, ताम्बे, जिस्त और लोहे की मूर्तिया भर देंगे। पर इस बददिमाग ने सारी जगह म एक मशीन लगाकर सब योजना चौपट कर दी। इसने दिमाग की मशीन लगाई और दिमाग बना-बना-कर बेचन लगा और जिस जिसने वह दिमाग प्रयोग किया उसी-उसी-ने कहा—'आदमी कुछ भी नहीं, सडकें कुछ नही, घर, मकान, इटें, पड,

9

पाली चार चौराहे का शृगार देखने वाला था। लोगो की भीड क ी रग बिरगी झडिया का देख रही था, ा भी टाँ मुखौटा को। कभी उन मूर्तियो को जो वनमानुस सी दिखाई देती थी और वह बहुत स काम कर रही थी। चौराहे म उस समय खूब रौनक थी जो बढती ही जा रही थी। सबसे बडी रौनक यह घडी थी जो तज चाल स चल रही थी। ऐसा लगता कि सूइया घुटनो के बल चल रही थी पर कम ज्यादा गिनती के अक्षरो की जगह हर गिनती की जगह पर गोल चक्कर था।

मच क ऊपर और आसपास कागजी फूलो का छिलराव था। मालाए थी जो झूम रही थी। लोगो की भीड बडी बेसब्री स इतजार कर रही थी।

फिर एक आदमी के मच पर चढ जाने से शोर का समुद्र शात हो गया। चारो ओर खामोशी छा गइ। उस आदमी ने जोर स कहना शुरू किया—

'मित्रो! अब वे तस्वीरें जिनकी कभी चोरी नही की जा सकती थी, अब चोरी हो गई हैं। मेरी एक तस्वीर भरी दोपहरी म ही चोरी हो गई है। आज के समय उस तस्वीर की कीमत चाहे कुछ भी न हो पर उसका महत्त्व बडा है—वह मेरी खानदानी तस्वीर थी। मुझे पता चला है कि कोई चोर उसे चुराकर सीधा चौराहे की ओर भागा है। मरा चोर ढूढने के लिए आपको मेरी सहायता करनी चाहिए। उस तस्वीर के बिना मै खोटे सिक्के की तरह बिना मूल्य का हो जाऊगा।

दूसरे आदमी न पहले को परे हटाया और फिर चिल्लाया—

पहले मेरी तस्वीर का अता पता ढूढो—मैं भी तुम्हारा हू, तस्वीर भी तुम्हारी है और चोर भी तुम्हारा।'

"तुम्हारी तस्वीर कब खोई थी ? ' पहले आदमी ने पूछा।

"ठीक दुपहर को जब सूरज सिर पर आ गया था।"

"मेरी चोरी का भी यही समय था।' पहले ने कहा।

"तब हो सकता है एक ही चोर ने दो जगह एक ही समय चोरी की हो।" दूसरे ने कहा।

'हा हो सकता है।" पहले ने कहा, "पर यह भी तो हो सकता है कि एक ही समय पर दो जगह पर से एक तस्वीर चोरी की गई हो।' पहले ने अपना विचार बताया।

"क्यो नही हो सकता ?" दूसरे ने कहा।

मित्रो ! दोनो चिल्लाए—'एक चोर एक ही समय म दो जगहा पर से एक तस्वीर चुराकर इधर भागा है—हमपर तरस खाए और हमारा चोर ढूढ दें।'

तीसरा आदमी दौडता हुआ मच पर चढ आया और ज़ोर से बोला—

'तस्वीरो को गोली मारो—अब तो दिमागो की चोरी शुरू हो चुकी है। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं सोया था तो मेरा दिमाग मेरी खोपडी म सही सलामत था पर सुबह उठकर देखा—कि खोपडी तो मेरे पास है पर दिमाग चोरी हो गया था। मुझे विश्वास है कि चोर ने दिमाग निकाला और आकर लोगो मे मिल गया। मुझे मेरा दिमाग वापिस करवा दें। आप तो जानते है कि पशु और आदमी मे केवल दिमाग का ही अन्तर होता है। मुझपर दया करें।" वे तीनो बोलते बोलते चुप हो गए। एक बूढा लाठी को मच पर ठक ठक करता ऊपर चढ आया। उसकी झुकी हुई आखो म थोडी सी नमी थी। वह रुआसी आवाज मे बोला—

'लोगो ! मैं नयनो प्राणो से रह गया हू—बीत गया हू । अब अगल पर की तयारी मे लगा हू । पर मुझ लग रहा है कि मेरी मृत्यु आसानी से नही होगी । एक चोर ने मेरी गाठ चुरा ली है जिसमे मने अपनी और अपने पितामह की मान-मर्यादा, अहम, सम्मान और स्वाभिमान बाधे हुए थे । वह गाठ मुझे ढूढ दें । म उसे अपनी छाती पर रखकर मरना चाहता ह । मेरी गति कराए और गाठ के चोर ढूढ दें।" एक साथ साथ ही पहले तीन लागो ने फिर से अपनी प्रा्थना दोहराई ।

एक तीखे नयननक्श वाली सुदर औरत, जो अकडकर चल रही थी, मच पर चढ़ आई । पहले ता वह लोगो को देखती रही फिर बोली —'हर औरत की तरह मैं भी एक सडक पर चल रही थी, सब कुछ साथ लेकर । पर क्या अनथ हुआ कि कुछ देर चलने पर सडक पर कितन ही चेहरे खिसक आने लगे । मैं दूसरी सडक की ओर हो गइ पर मेरा सब कुछ गुम हो गया । मैं वापिस मुडी ता पहली सडक पानी की लहरो की तरह गायब हो चुकी थी, कही भी नही मिली । मुझे मेरी सडक ढूढ दें । मैं सडक के बिना कहा जाऊगी ?"

फिर एक शार-सा मच गया । एक पागल-सा आदमी हाथ-पाव मारता मच पर चढा और ठहाका मारकर हसने लगा । उसकी हसी समाप्त ही नही हो रही थी ।

'तुम ऐसे हस क्या रह हो ?'' मच पर बैठे एक व्यक्ति ने पूछा ।

"इसलिए कि मेरा जो कुछ गुम है वही सब का गुम है"—कहकर उसने एक और ठहाका छोडा ।

"तुम्हारा क्या गुम है ?" दो-तीन ने पूछा ।

"मेरा मैं गुम है ।" पगले ने उत्तर दिया ।

"मैं गुम है ?" एक सवाल उछाला गया ।

'हा मेरा मैं गुम है, मैं तो चोर को जानता हू ।"

"तुम्हारा मैं तुम है और तुम चोर को भी जानते हो—कहा है वह चोर ?" पहले आदमी ने पूछा।

यह तो है—मैं ही चोर हूं। अपने में की चोरी मैंने स्वयं की है।' तो दूसरा आदमी हंसा—"अगर तुम चोर को जानते हो तो शोर क्यों मचा रहे हो ?'

"इसलिए कि चोर की आत्मा चोर को चैन से बैठने नहीं देती—अगर मैं चिल्लाऊंगा नहीं तो शायद मर जाऊं—मैं मरना नहीं चाहता।"

चौराहे में खड़े लोगों ने इतनी तालियां बजाई कि दीवार, चौराहा, और दुकानें हिल उठीं। फिर लोग बिखरने लगे ऐसे जैसे मामूली सी आंधी से सूखे पत्ते बिखरने लगते हैं।

'हम भी चलें ?' पड़ोसी ने कहा।

'हां चलो।" कुछ समझ नहीं आता कि यह नाटक का आरम्भ है या अंत।

दोनों चल पड़े उस सड़क पर जो सबकी थी पर जिसका अपना कोई नहीं था—वह सड़क जो सबको मिलाती थी पर स्वयं अकेली थी।

o o o
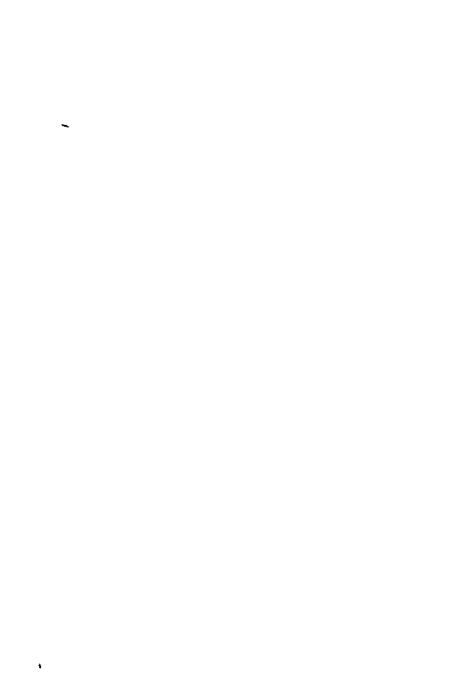
ओ० पी० शर्मा 'सारथी'

डोगरी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार। कला के अनन्य उपासक। डोगरी कहानी में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग करने में अग्रणी।

1962-64 तक अपने चित्रों की एकल प्रदर्शनियां आयोजित की जिनमें अपूर्व प्रशंसा प्राप्त की।

पिछले बीस वर्षों से रेडियो के माध्यम से नाटकों, वार्ताओं आदि का प्रसारण।

1972 में उपन्यास 'मुक्का बारूद' स्थानीय कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

अब तक 5 उपन्यास, 5 कहानी-संग्रह और दो काव्य-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। कई कहानियों का हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

सम्प्रति रीजनल रिसर्च लेबोरेटरी में वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत।